❖ अमरावती, गुरुवार ३१ अक्तुबर से ६ नवंबर २०२४ ❖ वर्ष १५ ❖ अंक १९ मूल्य २०/- पृष्ठ ३२ ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2021-2024 डाक : शुक्रवार - शनिवार

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

दीपावली विशेषांक

E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com

बाबूजी के आदर्श

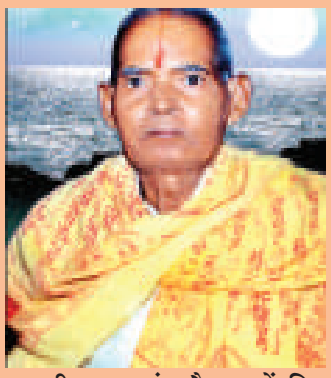

जीवन क्षणभंगुर है. लाखों की दौलत कमाने के लिए कभी याद नहीं किया जाता है. लेकिन जिन लोगों ने जीवन में धर्म,कर्म और नेक कामों में सदैव योगदान दिया है, उन्हें कोई भूलता भी नहीं है. आपका जीवन क्षणभंगुर है लेकिन आपके कर्म आपको अमरत्व प्रदान करते हैं. दीवाली में खुशियां बांटते रहो, कभी कम नहीं होगी.

सभी के जीवन में उजियारा आए

समूचे विश्व में दीपावली का पर्व उत्साह से मनाया जा रहा है. हम तो प्रभु से इतनी ही कामना करते हैं कि प्रभु आप सभी को स्वस्थ रखना, मस्त रखना, किसी भी तरह का दुःख किसी के जीवन में न हो और सभी का जीवन खुशियों से ओतप्रोत रहे. दीपावली खुशियों के साथ त्याग का भी त्यौहार है. यह त्यौहार जहां प्रकाश और खुशियों का परिचायक है, वहीं दूसरी ओर यह अपार त्याग का भी परिचायक है. जीवन में जितना बन सके, सदैव अच्छा करें, स्वयं भी खुश रहें और दूसरों को भी खुश रखें. दीपावली की सभी देशवासियों को धर्म, आचार-विचार और राष्ट्रधर्म के साथ माता-पिता की सेवा को प्रोत्साहन देने वाले विदर्भ स्वाभिमान की ओर हार्दिक शुभकामनाएं. इस पर्व पर अपने लिए जीने के साथ ही जब हम

सुभाषचंद्र जे. दुबे

ऐसे लोगों के लिए भी कुछ करने का प्रयास करते हैं, जिनको हमारी मदद की जरूरत है तो निश्चित ही यह दिवाली यादगार साबित होती है. पुराने चावल जैसे संगठन अमरावती में हैं, जिन्होंने सेवा की परिभाषा बदली है. बिपिन मिश्रा तथा उनके सभी साथियों का अभिनंदन किया जाना चाहिए, जिनके दिमाग में कल्पना सूझी. न्यायलयीन सेवा से निवृत्ति के बाद संगठन ने जिस तरह से समाज सेवा में स्वयं को झोंका है, वह काबिले तारीफ है. अमरावती में सेवाभावियों में सुदर्शन गांग, चंद्रकुमार जाजोदिया, नानकराम नेभनानी, डॉ. राजेश जवादे, डॉ.पंकज घुंडियाल, ज्ञानशांति उपवन जैसे वृद्धाश्रम के कर्ता-धर्ता ज्ञानचंदजी कोठारी और श्रीमती शांतिदेवी कोठारी के साथ पूरा कोठारी परिवार भी अभिनंदन का पात्र है. आज स्वार्थ सभी को है लेकिन इस स्वार्थ

(शेष २ पर)

विशेष संपादकीय मार्गदर्शक

मा.सुदर्शनजी गांग

खुशियों के साथ ही त्याग के प्रतीक पर्व दीपावली के उपलक्ष्य में हमारे सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, स्नेहीजनों, शुभचिंतकों को हार्दिक शुभकामनाएं. दीपावली का पर्व सभी के जीवन में उर्जा, उत्साह तथा उमंग लाए,सभी स्वस्थ रहें,मस्त रहें, प्रभु चरणों में यही कामना. दीपावली की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं.

सौ. वीणा सुभाषचंद्र दुबे
मुख्य प्रबंधक

सभी देशवासियों
को दिवाली की
हार्दिक शुभकामनाएं!

आडवाणी डेंटल सुपर स्पेशालिटी हॉस्पीटल,
अंबापेठ, अमरावती

डॉ.डी.जी. अडवाणी
सुख्यात राष्ट्रीय दंत शल्य चिकित्सक, अमरावती

चंद्रकुमार उर्फ लप्पी भैय्या जाजोदिया
प्रमुख मधुसूदन ग्रुप, अमरावती-मुंबई

MADHUSUDAN GROUP

संपादकीय .....

त्याग का प्रतीक है दीपावली

दीपावली के पावन पर्व पर विदर्भ स्वाभिमान के सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं और सदैव सहयोग करने वाले मान्यवरों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. यह पर्व त्याग और जीवन को सदैव सकारात्मक सोच के साथ आगे ले जाने का संदेश देता है. जिस तरह से दीपक जलकर भी रोशनी देता है, उसी तरह हमें भी जीवन में स्वयं कष्ट सहने के बाद भी किसी को दुःख नहीं पहुंचाने की सीख यह दीपावली का पर्व देता है. हम सभी भाग्यशाली हैं, जिन्हें पवित्र और पावन भारत भूमि में जन्म का सुअवसर मिला है. यह देश देवी-देवताओं का देश है, यह देश सदैव विश्व कल्याण की भावना रखता है. यह देश मानवता, जीवों के प्रति भी सदैव दयाभाव रखता है. दुनिया में शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो जो हर तरह से प्रसन्न हो, जिसे किसी तरह का दुःख या परेशानी नहीं होगी. धन-दौलत है तो औलाद नहीं, औलाद है तो औलाद से सुख नहीं, सब कुछ है तो स्वास्थ्य साथ नहीं देता है, ऐसे लोगों की संख्या भी करोड़ों में है. ऐसे में खुशियों को सभी ढूंढते हैं लेकिन इस बीच में जो लोग औरों को खुशियां देने का काम करते हैं, वे अत्याधिक सुखी होते हैं. भारतीयों के लिए दीपावली का पर्व खुशियों का रहता है. दीपक भी हमें यही सीख देता है कि जिस तरह वह स्वयं जलकर भी लोगों को रोशनी देता है, उसी तरह हमें भी खुद भले ही तकलीफ में रहें लेकिन अन्यों को खुश करने का प्रयास करना चाहिए. अगर इतना भी संभव नहीं हुआ तो हमें कम से कम किसी को तकलीफ देने का प्रयास बिल्कुल नहीं करना चाहिए. कोरोना महामारी के कारण दो साल की दीवाली खराब गई थी, स्थिति धीरे-धीरे संभल रही है. उम्मीद करें कि इस दीपावली के बाद से सभी के जीवन में खुशियां आएंगी और सभी का जीवन रोशन होगा.दीपावली की सभी भारतीयों को हार्दिक शुभकामनाएं. विश्व में यही पर्व ऐसा है जो रोशन करने का काम करता है, वह चाहे जीवन को प्रसन्नता देने की बात हो अथवा अंधेरे को चीरने का काम दीवाली करती है.

दीपावली त्याग कर दूसरों को खुशियां बांटने का संदेश देती है. भारतीय संस्कृति भी इसी पर आधारित है. वसुधैव कुटुंबकम वाली संकल्पना केवल भारतीय संस्कृति में है. यही कारण है कि भारत को इस मामले में विश्वगु डिग्री कहा जाता है. कहते हैं कि जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है, उसे दीपक कहते हैं. क्या इन्सान दीपक जैसा बन सकता है, हम जलते हैं तो हैं लेकिन दूसरों को जलाने के लिए जलते हैं न कि किसी के जीवन में खुशियां लाने के लिए जलते हैं. दीपक से जीवन में उजाले की सीख लेनी चाहिए. वह स्वयं तो जलता है लेकिन अंधेरे को खत्म कर दूसरों को उजाला देता है. त्याग का प्रतीक दीपक है. निर्जीव होकर भी उच्च-उम्दा सोच वाला कार्य दीपक करता है और एक हम हैं जो हमारे क्षणिक स्वार्थों के चलते अपनों के काम भी नहीं आ पाते हैं. दीपावली खुशियों के साथ ही इस बात का प्रतीक पर्व है कि हमें दूसरों को खुशियां देने का निरंतर प्रयास करना चाहिए. क्योंकि जब हम दूसरों को खुशियां देते हैं तो वह खुशियां रिफ्लेक्ट होकर हमारे पास ही आती हैं.भारतीय संस्कृति में पर्वों के राजा के रूप में दीपावली को माना जाता है. यही कारण है कि तमाम भेदभावों को छोड़कर इस पर्व पर सभी खुशियों से सराबोर होकर तमाम दुःख, गम भुलाकर जीवन में उत्साह, उर्जा तथा उमंग की कल्पना में खो जाते हैं. एक-दूजे को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए आत्मीयता का जहां उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, वहीं दूसरी ओर अनेकता में एकता का दर्शन कराते हैं.भारतीय संस्कृति में पर्वाधिराज के रूप में पांच दिनों के दीप पर्व की धार्मिक तथा परम्परागत महत्ता है. इसकी शुरूवात ३० अक्तूबर से हो रही है.दीप का पर्व कई मायनों में हमें महत्वपूर्ण संदेश भी देता है. इस पर्व में दीपक का अहम् महत्व रहता है. यह पर्व हमें त्याग, प्रेम तथा अपनेपन का भी संदेश देता है. साथ ही यह बताता है कि हम भले ही दुःखी अथवा परेशान क्यों न रहें, लेकिन हमें किसी की मुसीबत, परेशानी का कारण नहीं बनना चाहिए. वक्त के साथ काफी कुछ बदल गया है.पहले दीपावली के मौके पर लोगों में जो आत्मीयता दिखाई देती थी, आजकल वह वैश्वीकरण के दौर में थोड़ी बहुत कम हुई है. विश्व को तो आधुनिक तंत्रज्ञान से हम समेटने में सफल रहे हैं, लेकिन इन्सान इन्सान से दूर होता जा रहा है. पहले पोस्टकार्ड वाले पत्रों के स्थान पर आधुनिकतम ग्रीटिंग कार्ड आ गए हैं. लेकिन वह अपनापन, एक-दूसरे के बारे में सोच कहीं गुम हो गई है. दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा जिस पर पूरे समाज को देश के चिंतन करना चाहिए, वह है पर्यावरण संतुलन का मुद्दा. जल है तो ही कल है. क्या बिना जल के हम जीवित रहने की कल्पना कर सकते हैं. ऐसे में जरूरी है कि हम पर्यावरण की सुरक्षा में योगदान दें. हर भारतीय अगर एक पौधा रोपित करने का संकल्प ले ले तो निश्चित तौर पर १३० करोड़ पेड़ तैयार हो जाएंगे. सभी को पर्यावरण के साथ ही मानवता की सेवा, राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि मानते हुए मैं अपने देश को क्या दे सकता हूं, यह सोचना होगा और उसके मुताबिक आचरण करने का प्रयास करना होगा. दीपावली की पुनश्च सभी को शुभकामनाएं.

पृष्ठ १ से आगे

सभी के जीवन में उजियारा आए

के साथ अगर परमार्थ की भावना रहे तो निश्चित तौर पर समाज में कोई भूखा नहीं रहे, कोई माता-पिता उपेक्षित नहीं रहे. अमरावती में जहां कई सामाजिक संगठन हैं जो मानवता का दीप जलाए रखे हैं. सैकड़ों संगठन हैं. दीपावली त्याग का संदेश देती है और केशरीनंदन संगठन के मनोज चौरे और उनके साथी, पूर्व नगर सेवक प्रदीप बाजड़, तपोवन संस्था के अध्यक्ष डॉ.सुभाष गवई सहित हजारों ऐसे नाम लिए जा सकते हैं, जिन्होंने मानवता की सेवा को सार्थक करने का काम किया है.

दीपावली पर देशभर में अपार उत्साह रहता है. लेकिन हमें लगता है कि सार्थक दीवाली उसे ही कहा जा सकता है कि जब समाज का सम्पन्न वर्ग दीपावली पर अभाव से पीड़ित बच्चों तथा परिवारों को खुशियां देने का काम करे. उन बुजुर्ग माता-पिता को भी खुशियां देने का काम करे, जिन्हें अपनों ने ठुकराया है. वृद्धाश्रम देश को लगा कलंक है, हमारे संस्कार इसकी इजाजत नहीं देते हैं. समाज में वृद्धाश्रमों में पहुंचकर कुछ समय ऐसे माता-पिता के साथ बिताने, छोटी गिफ्ट देने के साथ ही उनका आशिर्वाद लेने का प्रयास करें. निश्चित तौर पर आपके लिए यह पल अविस्मरणीय रहेगा. हम सभी को त्याग के इस पर्व पर वहां भी रोशनी फैलाने का प्रयास करना चाहिए, जहां वर्षों से अंधेरा है. तभी सही मायने में दीपावली सार्थक होगी. अमीरी और दिलदारी दोनों अलग बाते हैं लेकिन राणा दम्पति द्वारा ही वर्षों से गरीबों को किराणा के रूप में मदद की जाती है, चंद्रकुमार जाजोदिया द्वारा लाखों रूपए मानव सेवा पर खर्च किया जाता है, सेवा की यह कड़ी चलनी चाहिए और अन्यों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए. हमें यह याद रखना चाहिए कि हम ऐसे कर्म करें कि लोग हमारे जाने के बाद भी याद रखें. वर्ना कंजूस, केवल खुद के लिए जीने वालों को तो जीते जी भी और मरने के बाद भी गालियां लोग देते ही हैं. यह हमें तय करना होगा क्योंकि आखिर फैसला भी हमारा है और जीवन भी हमारा है.

सुभाषचंद्र जे. दुबे
संपादक

१. दिवाली का त्योहार दीपों की रौशनी का प्रतीक है, जो हमारे जीवन में आशा और उपलब्धि की ओर दिशा प्रदान करती है.
२. दिवाली के इस खास मौके पर, आपके जीवन में नई खुशियाँ और सफलता की दीपों की तरह चमकें.
३. लक्ष्मी माता की कृपा से, आपके घर में सुख, शांति और संपत्ति की वृद्धि हो.
४. दिवाली के इस त्योहार पर, हम अपने पापों को जला कर नए आरंभों की ओर बढ़ते हैं.
५. रात की अंधकार को दीपों की रौशनी से हराने का त्योहार है दिवाली, हमें अपने जीवन में बुराई को हराने का निश्चित प्रामाणिक मौका देता है.
६. दिवाली के दिन, दिल से दिल मिलने का और प्यार और सदयता की ओर बढ़ने का संकेत होता है.
७. दिवाली के त्योहार के साथ, हमें दोस्ती और परिवार के साथ गुजारे गए समय का महत्व याद आता है.
८. दिवाली के इस प्यारे मौके पर, आपके जीवन को खुशियों से भर दें, और आपके सपनों को हकीकत में बदलने का इरादा करें.
९. दिवाली के त्योहार के दिन, हम सभी को एक नई शुरुआत की तरफ बढ़ने का एक नया मौका मिलता है.
१०.दिवाली के इस खास मौके पर, आपके जीवन में सुख, समृद्धि, और सफलता हो.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881
मोबाइल नं.-09423426199,8855019189/8208407139
E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com | www.vidarbhswabhiman

व्यावसायिक एकता का आनंद

व्यवसाय में भी एकता दिलाती है सदैव कामयाबी

तीन मित्र अरुण कडू, सुदर्शन गांग एवं प्रदीप जैन ४५ वर्ष से हैं सफलता के शीर्ष पर

अमरावती शहर में वैसे तो व्यवसाय के क्षेत्र में कई परिवार हैं लेकिन तीन लोगों द्वारा विगत ४५ साल से निभाई जा रही एकता और व्यावसायिक सफलता और उससे मिलने वाले आनंद का परिचायक बडनेरा - अमरावती का आनंद परिवार है. इसके तीनों संचालक अरूण कडू, सुदर्शन गांग तथा प्रदीप जैन की मित्रता सगे भाईयों से भी बढ़कर है, वहीं तीनों ही परिवारों की तीनों पीढ़ियों की समझदारी और व्यवसाय के प्रति समर्पण, पारदर्शी कार्यप्रणाली निश्चित तौर पर सभी के लिए आदर्श उदाहरण बन सकती है. वैसे भी कहते हैं कि माता-पिता का जिसे आशिर्वाद मिले, वह प्रकल्प कभी असफल नहीं हो सकता है. तीनों ही संचालकों की समझदारी और व्यवसाय के साथ ही आनंद परिवार की सामाजिक, धार्मिक और हर क्षेत्र में निभाई जाने वाली जिम्मेदारी की जितनी सराहना की जाए, कम है. संघर्ष में जब हर्ष की अनुभूति होने लगे तो समझ लेना चाहिए कि दिशा और दशा दोनों ही ठीक है.

आनंद परिवार के तीनों परिवारों के जिक्र की बजाय आनंद परिवार का उल्लेख शादी, व्याह, धार्मिक काम, सामाजिक कामों में लिखा जाना जहां उनकी एकता का परिचायक है, वहीं एक दूसरे को दिल से चाहने और हर सुख और दुख मिलकर निपटने वाली अदा निश्चित ही सभी के लिए आदर्श से कम नहीं है. भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय ट्रस्टी सुदर्शन गांग ने विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत में कहा कि एकता में ही शक्ति होती है. फिर चाहे संयुक्त परिवार की बात हो चाहे व्यवसाय में सफलता का प्रयास हो. आनंद परिवार की कामयाबी निश्चित तौर पर सभी के लिए उदाहरण है, आनंद परिवार. आज स्वयं के साथ ही अनेक लोगों को इस परिवार ने रोजगार दिया है, इनके कर्मयोगी भी समर्पित रहते हैं, और नौकरी के साथ ही सामाजिक योगदान में भी शारीरिक रूप से योगदान देते हैं.

आनंद परिवार को मां का आशिर्वाद प्राप्त है

गरीबी तथा संघर्ष के दिनों में आनंद प्रतिष्ठान की स्थापना की कल्पना सुदर्शन गांग और अरूण कडू की रही. मेहनत की तैयारी के साथ ही उन्हें इसमें मां का आशिर्वाद मिला है. जिसे मां का आशिर्वाद हो, वह कभी पीछे नहीं हो सकता है, इसका उदाहरण आनंद परिवार है. छोटे-छोटे व्यवसाय से व्यापक व्यवसाय कैसे किया जाता है, इसकी गहन जानकारी होने तथा मां ने भी उन्हें प्रोत्साहन देने के साथ ही उस समय अपनी बचत में से ३००० रूपए दिए, यह मदद उस समय के हिसाब से बड़ी मदद कही जा सकती है. ४ मई १९७९ में आनंद कृषि केन्द्र के नाम से व्यवसाय के क्षेत्र में साझेदारी में अरूणभाऊ कडू के साथ पदार्पण किया. इस दौरान भी अनाज के साथ साथ कवेलू का व्यवसाय किया. मंदी के दौर में कुंभार से हजारों कवेलू बनवा लेते थे और गर्मी में इनकी मांग बढ़ने पर इसे बेचते थे. इससे कम लागत में भी अच्छी खासी कमाई हो जाती थी, वहीं लोगों की जरूरतें भी पूरी करने का संतोष मिलता था.

तत्कालीन स्थितियों में कवेलू की बडनेरा ही नहीं तो आसपास के क्षेत्रों में भी अच्छी-खासी मांग रहने के कारण इससे भी बेहतरीन आय हो जाती थी. वे कहते हैं कि अगर मन से मेहनत करने की तैयारी है तो कमाना कठिन नहीं है. लेकिन इसके लिए मेहनत की तैयारी मन से करना जरूरी रहता है. जीवन में मेहनत को कोई पर्याय नहीं रहने की बात का अनुभव उन्हें हर काम करने के बाद आने लगा. वे बताते हैं कि तरक्की को मेहनत का जोड़ जब तक नहीं मिलता है तब तक वह सही मायने में नहीं होती है. उस समय प्रतिदिन १२-१५ बोरा ज्वारी की विक्री वे करते थे. स्थितियां ऐसी थी कि समृद्धि और विपत्ति दोनों साथ-साथ चल रही थी. स्थितियां हर मोड़ पर कुछ न कुछ शिक्षा, अनुभव तथा निपटने का गुर देती जा रही थी. जिस समय बडनेरा में आनंद कृषि केन्द्र शुरू किया गया, उस समय वहां स्पर्धा नहीं रहने का भी काफी लाभ हुआ. आनंद परिवार के प्रमुख अरूण कडू, सुदर्शन गांग तथा प्रदीप जैन का आपसी प्रेम सभी के लिए प्रेरणा देने का काम करेगा. आज आनंद परिवार का व्याप समाधान कारक हो गया है. परिवार की तीन पीढ़ियां इसमें योगदान देने के साथ ही सभी कार्यों में आदर्श व्यावसायिक परिवार के रूप में इसकी पहचान बनी है. कामयाबी की यही गति सदैव आगे बढ़ते रहे, हम यही कामना भगवान वेंकटेश बालाजी के चरणों में करते हैं.

विदर्भ स्वाभिमान परिवार.

खुशियां बांटने का पर्व है दीपावली, बांटते रहें

विदर्भ स्वाभिमान, ३० अक्तूबर

जीवन में हमें हर भारतीय पर्व कुछ न कुछ सीख देते हैं. दीपावली का पर्व भी हमें त्याग का सर्वोच्च सीख देता है. जिस तरह से दीपक स्वयं जलता है और अन्यों को रोशन करता है, उसी तरह हमें भी तकलीफ सहकर भी दूसरे को तकलीफ देने तथा बदले की मानसिकता में कभी भी काम नहीं करना चाहिए. सदैव खुश रहते हुए सभी को खुशियां बांटने का प्रयास करना चाहिए. इससे मिलने वाला संतोष और खुशी का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है. समय के साथ बदलाव जरूरी है लेकिन हमारी आदर्श संस्कृति और परम्परा को भी हमें कभी नहीं भूलना चाहिए. दीपावली पर हमारी एक बुराई छोड़ने के साथ ही हमेंएक अच्छाई अपनाने का प्रयास करना चाहिए. इससे निश्चित तौर पर मिलने वाला आनंद पैसों में कभी नहीं तौला जा सकता है. इस आशय का मत नेत्र शल्य चिकित्सक, समाजसेवी, विदर्भ रत्न सहित दर्जनों पुरस्कार प्राप्त करने वाले डॉ. राजेश जवादे ने किया.

विदर्भ रत्न डॉ. जवादे ने कहा

दिव्यांगों की सेवा के साथ ही गरीब मरीजों को सदैव मार्गदर्शन देने वाले और अभी तक एक लाख से अधिक मोतियाबिन्दु का ऑपरेशन करने वाले डॉ. जवादे के मुताबिक खुशियां जब तक जीवन है बांटते रहें, इससे निश्चित तौर पर आपकी खुशी कभी कम नहीं होगी.

विदर्भ स्वाभिमान के भारत के सबसे बड़े दीपावली विशेषांक को दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि इस अखबार ने मानवता, दयाभावना तथा माता-पिता की सेवा को ही सदैव प्रोत्साहित करने का काम किया है. मानवता की सेवा से बड़ी सेवा और मानव सेवा से बड़ा धर्म नहीं हो सकता है. हर व्यक्ति को अपने स्तर पर मानव सेवा और मानव धर्म

का पालन करना चाहिए. ऐसा करने से दुनिया का जो सुंदर रूप बनेगा, वह सभी के लिए आदर्श बनेगा. आज विश्व में इंसान तो तेजी से बढ़ रहे हैं लेकिन इंसानियत का घटना चिंता का विषय है. इंसान के अनुपात में ही इंसानियत बढ़ाने का प्रयास करने की सलाह दी.

बचपन से ही माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र के साथ ही संयुक्त परिवार को मानने वाले डॉ. राजेश जवादे जितने बेहतरीन डाक्टर हैं, उससे भी कई गुना बेहतरीन इन्सान है. वे कहते हैं कि जीवन तो प्रभु से प्राप्त उपहार है. इसका हम जितना परमार्थ, किसी की मदद करने में उपयोग करेंगे, वह उतना ही सफल होगा. जीवन में सेवाभावना व्यक्ति को तरक्की के साथ ही आत्मिक संतोष प्रदान करती है. सामाजिक कामों में अग्रणी रहने के कारण विदर्भ रत्न, लोकमत एक्सलंस सहित दर्जनों पुरस्कार प्राप्त करने वाले डॉ. जवादे शहर ही नहीं तो राष्ट्रीय स्तर के नेत्र चिकित्सक हैं. लेकिन उनकी सादगी और अपनापन किसी को भी प्रभावित किए बगैर नहीं रहता है. अच्छे कामों में मदद के लिए जहां वे तत्पर रहते हैं, वहीं उनके जीवन पर छत्रपति शिवाजी महाराज की अमिट छाप हैं. वे कहते हैं कि स्वयं के लिए जानवर भी जी लेते हैं. लेकिन जो लोग औरों के लिए जीते हैं, औरों का भी विचार करते हैं, उनके जीवन में प्रभु कभी तकलीफ नहीं लाते हैं. वैसे भी नर में ही नारायण का निवास होता है. इस सच्चाई को जो व्यक्ति जान जाता है, उसका जीवन सफल हो जाता है. जितना संभव हो सके, यथासंभव गरीबों, जरूरतमंदों की मदद करने का प्रयास क़रना चाहिए. जब हम कुछ अच्छा करते हैं तो उसकी मिलने वाली खुशी शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते हैं. संयुक्त परिवार की जरूरत के साथ ही वे कहते हैं कि एकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है.जब परिवार में एकता होती है तो कोई उस परिवार की ओर आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं करता है. समाज में एकता होती है तो उसकी समस्या हल होती है. इतना ही नहीं तो देश की एकता होने पर देश का सर्वांगीण विकास होता है. जीवन में राष्ट्रधर्म, माता-पिता की सेवा को पुण्य का कार्य बताते हुए युवाओं से माता-पिता को सदैव खुश रखने की सलाह देते हुए दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी.

सभी के लिए अच्छा करने वाली सोच रखता हूं

विधायक रवि राणा का साक्षात्कार

गरीबों की दुवाओं ने सदैव दिलाई है कामयाबी, उनसे बड़ा कोई नहीं

विदर्भ स्वाभिमान,३० अक्तूबर

अमरावती- जीवन में मेरे पर माता-पिता का आशिर्वाद, प्रभु की कृपा और जनता का अपार प्रेम रहा है. इसका मैं शब्दों में बखान नहीं कर सकता हूं. मैं किसी प्रतिष्ठित राजनीतिक घराने से भी नहीं जुड़ा हूं लेकिन मुझे मेरी जनता का प्यार सबसे अधिक मिला है. यही कारण है कि बडनेरा में जीत का हेट्रिक किया है और इस बार भी चुनाव में मेरी जीत पक्की है. मैंने सदैव सभी को साथ लेकर काम करने का काम किया है. इतना ही नहीं तो राजनीति में आने से पहले भी मेरा जीवन सामाजिक कामों के लिए सदैव समर्पित रहता है. मैं दिल में कुछ नहीं रखता है, लेकिन मेरे दिल में कभी किसी के प्रति गलत भावना भी नहीं रहती है.जनता का प्यार मेरे लिए सदैव सर्वोच्च रहा है. इन शब्दों में बडनेरा में जीत की हैट्रिक का रिकार्ड बनाने वाले विधायक रवि राणा ने किया. उनके मुताबिक स्पष्टता उनकी खूबी है. उन्हें घुमा-फिराकर बोलना नहीं आता है. यही कारण है कि कईयों को उनकी बोल अच्छी नहीं लगती है. जनता के प्यार से ही उन्हें सब कुछ मिला है, ऐसे में उनके लिए जनता ही सबसे पहले होती है. जनता का प्यार जितना उन्हें मिला, उतना आज तक बडनेरा विधानसभा क्षेत्र में किसी को नहीं मिला है.

उनके मुताबिक ऊपरवाले का दिया सबसे बड़ा उपहार है. इसका उपयोग जब हम मानवता की सेवा के लिए करते हैं तो

निश्चित तौर पर ऊपरवाला भी प्रसन्न होता है और वह हमें तकलीफ नहीं होने देता है. हम अगर किसी का बहुत अच्छा नहीं कर सकते हैं तो हमें बुरा करने के बारे में भी नहीं सोचना चाहिए. हम जिस भी क्षेत्र में हैं, जब सेवाभाव को सामने रखकर उस क्षेत्र में काम करते हैं तो मिलने वाला संतोष करोड़ों की दौलत से बड़ा होता है. बचपन में गरीबी से स्वयं गुजरने के कारण इसका एहसास रखने वाले राणा गरीबों के लिए सदैव करते हैं. हजारों दिव्यांगों, गरीबों, मरीजों की मदद करते हैं. उनमें वीआईपी पन कभी नहीं रहता है.विदर्भ के पहले विधायक हैं, जिनके घर में सदैव लोगों का मेला लगता है. लेकिन सभी की मदद करने और परेशानियों को दूर भगाने का काम करते हैं. दीपावली को त्याग का त्यौहार बताते हुए उन्होंने कहा कि जाति,धर्म,पंथ को लेकर वे कभी नहीं काम करते हैं. लेकिन कुछ लोगों द्वारा उन्हें बदनाम करने का प्रयास किया जाता है. बावजूद इसके वे कहते हैं कि ऊपरवाला सभी के दिल में रहता है, वह जानता है, कौन कैसा है. उनके मुताबिक जीवन के अंतिम सांस तक जनता की सेवा करने का संकल्प उन्होंने लिया है. अपने संबंधों का उपयोग करते हुए बडनेरा ही नहीं तो राणा दम्पति ने सदैव विकास की गंगा बहाने का प्रयास किया. लेकिन जब जिले के ही लोगों द्वारा श्रेय की राजनीति के चलते विकास कामों में अडंगा डाला जाता है तो वे बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं. आत्मविश्वास से भरे तथा अपार लोकप्रिय रवि राणा ने कहा कि जीवन में उन्होंने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया. जो लोग पार्टी के प्रति समर्पित नहीं होते हैं, वे किसी के भी नहीं हो सकते हैं.

बचपन से ही संघर्षों से जूझने वाले तथा गरीबों, दीन-दलितों पीड़ितों की सहायता का सदैव भाव रखने वाले और करने वाले राणा ने कहा कि इन्सान का जीवन बड़े भाग्य से मिला है. माता-पिता के चरणों में जन्नत होता है,उनका आशिर्वाद जिस बेटे को मिल जाए, उसको किसी के पैर छूने की जरूरत ही नहीं पड़ती है. वे कहते हैं कि हम सभी भारतीय भाग्यशाली हैं, जिन्हें इस पवित्र भूमि में जन्म मिला है. बचपन से ही आदर्श विचारों से परिपूर्ण रहने वाले राणा ने दीपावली की सभी को शुभकामनाएं दी.

अमरावती के राष्ट्रीय गौरव हैं डॉ. लक्ष्मीकांत राठी

अ.भा.मानसोपचार विशेषज्ञ संगठन के अध्यक्ष बनकर दिलाया सौभाग्य

अमरावती के कई लोगों ने इस शहर का गौरव सदैव राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया है. ऐसे ही लोगों में हैं सुख्यात मानसोपचार विशेषज्ञ और इसके राष्ट्रीय संगठन के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत राठी. बेहतरीन डाक्टर, लायन्स के पूर्व गवर्नर के साथ ही दर्जनभर से अधिक पदों पर रहने वाले और सामाजिक सेवा को जीवन में अत्याधिक महत्व देने वाले डॉ. राठी सुख्यात कवि हैं. उनकी कविताएं संयुक्त परिवार, राष्ट्रप्रेम तथा अन्य बातों पर प्रकाश डालती हैं. पारिवारिक कविताएं प्रेरणा देने का काम करती हैं. वे कहते हैं कि जीवन में जितना संभव हो, सभी को मानवता की सेवा करनी चाहिए. बढ़ते तनाव को कम करने के लिए वे सदैव सक्रिय रहते हैं, उत्कृष्ट वक्ता के रूप में जहां देश-विदेश में उन्हें आमंत्रित किया जाता है, वहीं दूसरी ओर स्पष्ट वक्ता की उनकी ख्याति समूचे देश में है. खुशियां बांटने का जहां संदेश देते हैं, वहीं जन्मदिवस पर अपने कर्मचारियों को बोनस देने वाले जिले के शायद पहले व्यक्ति होंगे. वे कहते हैं कि हमारी खुशियों में कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, ऐसे में उनका सम्मान सदैव किया जाना चाहिए. उनके पास वर्षों से सेवारत कर्मचारी उनका गुणगान करते नहीं थकते हैं. उनका कहना है कि मानव जीवन प्रभु का दिया अनुपम उपहार

आदर्श डाक्टर, आदर्श पिता के साथ ही सभी भूमिकाओं को वे बेहतरीन तरीके से निभाते हैं. इस आशय का प्रतिपादन राष्ट्रीय मानसोपचार विशेषज्ञ संगठन के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत गोवर्धनदास राठी ने किया. विदर्भ स्वाभिमान को दिए गए साक्षात्कार में डॉ. राठी ने बढ़ती आत्महत्याओं, युवाओं में गुस्सा होने के साथ ही अन्य कई परेशानियां रहने और कुछ सेकंड के लिए व्यक्ति को संभालने पर इस तरह की घटनाओं को रोकने की बात कही. उनके मुताबिक आत्महत्या का विचार क्षणिक होता है. समय पर कोई संभाल ले तो ठीक हो जाता है. लेकिन समय पर संभालना जरूरी होती है. माता-पिता को जीवन में सदैव महत्व देने वाले और पिता के नाम पर ही अस्पताल का नाम खोलने वाले डॉ. राठी पारिवारिक जिम्मेदारी भी बेहतरीन ढंग से निभाते हैं. वे कहते हैं कि संयुक्त परिवार का बिखराव कई समस्याओं को जन्म देता है.

पागलपन नहीं होती है मानसिक समस्या

राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत राठी ने कहा कि मानसिक उपचार को लेकर गलत भ्रांतियां हैं, लोगों द्वारा इसे पागलपन माना जाता है. जबकि सच्चाई इससे हटकर है. हमारे दिमाग का पता हमें भी नहीं रहता है. लेकिन अच्छा प्रेम पूर्ण माहौल मिलने और मुस्कराने वाली स्थिति होने पर यह प्रसन्न होता है. मानसिक बीमारी को लोग पागलपन मानते हैं. पर ऐसा बिल्कुल नहीं है. दोनों अलग-अलग बाते हैं. लेकिन इसका पता नहीं चलने से गलत इलाज से समस्या बढ़ती है. डिप्रेशन सभी छिपाने का प्रयास करते हैं.वे कहते हैं कि मानसिक समस्या भी तनाव से ही पैदा होती है. जितना संभव हो, स्वयं भी खुश रहें और अन्यों को भी खुश रखने का प्रयास करें. दीपावली के पावन पर्व पर उन्होंने सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी. साथ ही सुख,समृद्धि और स्वास्थ्य की कामना की.

स्वस्थ रहें, मस्त रहें, खुश रहें, खुशियां बांटे

अपने लिए जिए तो क्या जिए, मानव जीवन सदैव दूसरों के लिए जीना चाहिए. सबसे करीबी साथी स्वास्थ्य होता है. यह अच्छा रहने के बाद ही धन-दौलत का हम उपयोग कर पाते हैं. ऐसे में हमें स्वयं स्वस्थ रहते हुए समाज तथा राष्ट्र के विकास में भी परमार्थ के माध्यम से योगदान देना चाहिए. यही हमारे जीवन को अमर बनाने का काम करता है. अपने लिए तो पेटभर कर जानवर भी जी लेते हैं. लेकिन परमात्मा ने हमें इन्सान बनाया है. साथ ही हर शास्त्र संदेश देते हैं कि हमें भी खुश रहना चाहिए और जिन्हें खुशियां नहीं मिल पाती हैं, उन्हें भी खुश रखने का प्रयास करना चाहिए.

कोरोना महामारी के दौरान योग के माध्यम से लाखों जिंदगियां बचाने वाले तथा कई देशों में योग की ऑनलाइन कक्षाएं लेने वाले उच्च विद्याविभूषित डॉ. डांगे अमरावती के जहां गौरव हैं, वहीं कार्यक्रम संचालक के साथ ही कई सेवाभावी संगठनों से जुड़कर सामाजिक कामों में भी अग्रणी रहते हैं. उनके मुताबिक दीपावली त्याग का संदेश देने वाला पर्व है. यह हमारी खुशियों के साथ ही अन्यों की खुशियों की प्रेरणा देता है. जिस तरह दीपक स्वयं जलता है लेकिन औरों को रोशनी देता है, उसी तरह हमें भी परमार्थ को जीवन का लक्ष्य बनाते हुए जितना संभव हो, नेक काम करना चाहिए. खुशियां बांटने

अंतर्राष्ट्रीय योग विशेषज्ञ डॉ. राजू डांगे ने कहा

वालों की खुशी परमात्मा कभी कम नहीं होने देते हैं. दीपावली पर उन्होंने सभी को स्वस्थ, मस्त जीवन की शुभकामनाएं दी. साथ ही कामना की कि सभी की मनोकामनाएं पूरी हों. मेहनत, लगन और समर्पण को महत्व देने वाले डॉ. डांगे कहते हैं कि धनदौलत ही जीवन में सब कुछ नहीं हो सकती हैं. इन्सान को इसका सदैव ध्यान देना चाहिए.

कर्मठ, संवेदनशील जिलाधिकारी हैं सौरभ कटियार

जनसेवा को ही मानते हैं सदैव ईश्वर सेवा

मतदान का अमरावती रिकार्ड बनाए

दीपावली को उन्होंने समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी. साथ ही सभी की खुशहाली की कामना की. उन्होंने इस बार अमरावती जिले में शतप्रतिशत मतदान करने का संकल्प लेने औरअन्यों को भी प्रेरित करते हुए इतिहास दर्ज कराने का आग्रह किया. अमरावती की गरिमा को इस माध्यम से राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चमकाने का अनुरोध सभी मतदाताओं से किया.

विदर्भ स्वाभिमान, ३० अक्तूबर

अमरावती- जनसेवा को ही ईश्वर सेवा मानने वाले अधिकारी के रूप मेंजिलाधिकारी सौरभ कटियार का उल्लेख किया जा सकता है. अमरावती की बदली राजनीति में किसी भी कलेक्टर के लिए काम करना आसान नहीं है बावजूद इसके जिस तरह से बेहतरीन समन्वय के साथ वे काम करते हैं और सभी को खुश रखने के साथ ही जनता के कामों को भी करने का प्रयास करते हैं, वह निश्चित ही काबिले तारीफ है. वे कहते हैं कि अच्छी सोच के साथ किया गया कोई भी काम किया जाता है तो निश्चत तौर पर वह बेहतरीन होता है. कर्मठ, अनुशासन प्रिय अधकिारी के साथ ही वे संवेदनशील अधिकारी हैं. मेलघाट में पूरे प्रशासन को जनसेवा में लगाने वाले और चौबीस घंटे स्वयं भी वहां रहने के चलते उनकी आदिवासियों, गरीबों के प्रति कैसी संवेदनशीलता है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है. अधिकार की बजाय मानवता को अत्याधिक महत्व देकर काम करने वाले संवेदनशील तथा अनुशासन प्रिय अधिकारी के रूप में जिलाधिकारी सौरभ कटियार का उल्लेख किया जा सकता है. मानवता को ध्यान में रखते हुए काम करने का उनका तरीका, गरीबों, आदिवासियों के हितों के मामले में उनकी ललक के कारण वे जिले में बेहतरीन अधिकारी के रूप में लोकप्रिय हे हे हैं. लोगों की शिकायतों को सुनना और उन्हें न्याय दिलाने का प्रयास के काम करने का तरीका अलग है. जिले के सर्वाधिक अलग है. उनके मुताबिक मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है. यही कारण है कि जिले के सर्वांगीण विकास के साथ ही वे सदैव मानव को ध्यान में रखते हुए प्रयास करते हैं. आदिवासी क्षेत्रों के विकास के साथ ही अन्य मामलों में उनकी सक्रियता सराहनीय रहती है. दिव्यांगों की समस्या के मामले में जितने गंभीर हैं, किसानों की समस्या के निराकरण में उतने ही सक्रिय रहते हैं. वे कहते हैं कि मानवता की सेवा का पर्याय नहीं हो सकता है. ऐसे में हर व्यक्ति को जितना संभव हो, मानवता की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए. जिले के विकास के साथ ही लोगों की समस्याओं के निराकरण के लिए सदैव नई कल्पनाएं अमल में लाते हैं. जनता के कल्याण की विभिन्न योजनाओं को चलाया जा रहा है. उसे प्रभावी तरीके से लागू करने के अलावा सभी लोगों को इसका लाभ देने के लिए उनका प्रयास रहता है. किसानों के मामले में भी जिलाधिकारी सदैव गंभीर रहते हैं. बैमौसमी बारिश के कारण किसानों के हुए नुकसान तथा किसानों की स्थिति को समझते हुए तत्काल सर्वेक्षण का निर्देश देते हुए उन्होनों यह साबित भी किया है. कई मौके पर जिलाधिकारी सौरभ कटियार ने जहां संवेदनशील अधिकारी रहने का परिचय दिया, वहीं अनुशासन प्रिय अधिकारी के रूप में भी अपने काम करने का अनुभव अधीनस्थों को कराया है. जिलाधिकारी कार्यालय में कामकाज का तरीका बदलने में जहां योगदान दिया, वहीं उनका स्पष्ट मानना है कि प्रशासन जनता की सेवा के लिए है, इसका उसे सदैव भान रखना चाहिए. दीपावली को त्याग का पर्व बताते हुए वे कहते हैं जिस प्रकार दीपक स्वयं जलकर अन्यों को उजाला देता है, उसी तरह केवल हमारी खुशियों के लिए जीने की बजाय अगर हम समाज,राष्ट्र के साथ ही मानवता की सेवा, अपने से कमजोर वर्गों की मदद के इरादे से जीने का प्रयास करें तो निश्चित तौर पर जीवन अमर हो जाएगा. पद की बजाय हर इन्सान को अपने अच्छे कामों से कद बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए. पद लोग भूल जाते हैं लेकिन हमारा स्वभाव, हमारा अच्छा काम सदैव कद बढ़ाने का काम करता है.

पुरानी परम्परा,आधुनिक शिक्षा का संगम है पोदार इंटरनेशल विद्यालय

प्राचार्य सुधीर महाजन ने संवारा है लाखों छात्रों का जीवन

अमरावती- स्थानीय कठोरा नाका क्षेत्र स्थित पोदार इंटरनेशनल विद्यालय न केवल जिले बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का बड़ा समूह और छात्रों के सर्वांगीण विकास का केन्द्र रहने वाली संस्था है. पुरानी परम्परा और आधुनिक दौर को समन्वित करते हुए बच्चों को जहां आदर्श शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है, वहीं बच्चों को आदर्श इन्सान भी बनाने का कार्य किया जाता है. शिक्षा के साथ ही प्राचार्य सुधीर महाजन के मार्गदर्शन में यहां पर साल भर विभिन्न उपक्रम लिया जाता है. इनके माध्यम से छात्रों के सर्वांगीण विकास का काम किया जाता है. सीबीएससी में जहां विद्यालय का नतीजा शतप्रतिशत रहता है, वहीं मेरिट छात्रों की संख्या भी भरपूर रहती है. विद्यालय का वातावरण शिक्षा के साथ आत्मीयता से परिपूर्ण रहने के कारण छात्रों का मनोबल भी बढ़ाने में मदद मिलती है. पोदार इंटरनेशल स्कूल के कई छात्रों ने जहां ओलंपियाड परीक्षा के साथ ही अन्य परीक्षाओं में शानदार सफलता प्राप्त की है, वहीं खेल के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अनगिनत पुरस्कार प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है. हर साल का यहां का नतीजा बेहतरीन रहने के साथ ही सदैव हर छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखा जाता है. उन्हें माता-पिता की सेवा, मानवता सबसे बड़ा धर्म और कर्म से ही जीवन संवरने की बात बताई जाती है. विद्यालय से निकले हजारों छात्रों ने आज विभिन्न क्षेत्रों में विद्यालय का नाम रोशन किया है.

सर्वांगीण विकास पर जोर

प्राचार्य सुधीर महाजन को जहां अनगिनत पुरस्कार मिल चुके हैं, वहीं दूसरी ओर प्रेरणा प्रदान करने वाले वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर सुख्यात हैं. पद के साथ उनके स्वभाव की खूबी के कारण लाखों मित्र तैयार किए हैं. राष्ट्रधर्म को सबसे बड़ा धर्म मानने वाले सुधीर महाजन ने दीपावली पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दीपावली त्याग का पर्व है. यह मानव को भी त्याग की सीख देता है. हम स्वयं तकलीफ में रहने के बाद भी अगर किसी रोते हुए को हंसाने की क्षमता रखते हैं तो निश्चित तौर पर यह सबसे खुशी होती है. पर्यावरण का ध्यान रखने के साथ ही खुशियां मनाने का आग्रह करते हैं. वे कहते हैं कि मानवता से बड़ा धर्म नहीं है. जीवन में प्रेम, ज्ञान बांटने से बढ़ते हैं. ऐसे में सदैव ध्यान रखें कि हमारी वजह से किसी को तकलीफ नहीं हुई. जो लोग जीवन में इतना कर लेते हैं, उन पर प्रभु की सदैव कृपा होती है. उन्हें अन्य कृपा की जरूरत नहीं रहती है.

खुशियां बांटने का त्यौहार है दीपावली, बांटते रहें

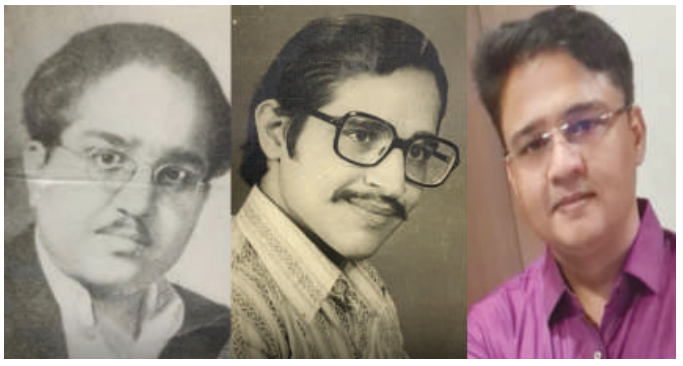

अमरावती– दीपावली खुशियों को बांटने का त्यौहार है, वहीं त्याग का भी सबसे बड़ा हिन्दुओं का पर्व है. जीवन में प्रेम, सम्मान और विश्वास देने से सदैव बढ़ता है. त्रिमूर्ति ज्वेलर्स ने भी सदैव अपने ग्राहकों के साथ यही बांटने का काम किया है. यही कारण है कि आज ग्राहकों के दिलों में हमें स्थान मिला है. प्रतिष्ठान ने ग्राहकों के विश्वास के साथ समय के साथ स्वयं को अपडेट किया है, यही कारण है कि अमरावती शहर ही नहीं बल्कि समूचे जिले में सुख्यात है. इस आशय का मत संचालक अमित कट्टा ने किया. उन्होंने दीपावली से अपने से कमजोर लोगों की मदद करने की सलाह दी.

मिलनसार के धनी के साथ सफलतम व्यवसायी अमित कट्टा के मुताबिक सदैव सहयोग की भावना रखनी चाहिए. यह पर्व त्याग और जीवन को सदैव सकारात्मक सोच के साथ आगे ले जाने का संदेश देता है. जिस तरह से दीपक जलकर भी रोशनी देता है, उसी तरह हमें भी जीवन में स्वयं कष्ट सहने के बाद भी किसी को दुःख नहीं पहुंचाने की सीख यह दीपावली का पर्व देता है. हम सभी भाग्यशाली हैं, जिन्हें पवित्र और पावन भारत भूमि में जन्म का सुअवसर मिला है. यह देश देवी-देवताओं का देश है, यह देश सदैव विश्व कल्याण की भावना रखता है. हर साल की तरह इस साल भी प्रतिष्ठान में विभिन्न आकर्षक डिजाइन

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स के संचालक अमित कट्टा का आग्रह

के आभूषण उपलब्ध हैं. ग्राहकों से इसका लाभ लेने का आग्रह किया. उनके मुताबिक ग्राहकों के साथ विश्वास का यह रिश्ता ही सबसे बड़ी कमाई मानते हैं. भारतीयों के लिए दीपावली का पर्व खुशियों का रहता है. दीपक भी हमें यही सीख देता है कि जिस तरह वह स्वयं जलकर भी लोगों को रोशनी देता है, उसी तरह हमें भी खुद भले ही तकलीफ में रहें लेकिन अन्यों को खुश करने का प्रयास करना चाहिए. अगर इतना भी संभव नहीं हुआ तो हमें कम से कम किसी को तकलीफ देने का प्रयास बिल्कुल नहीं करना चाहिए. कोरोना महामारी के कारण दो साल की दीवाली खराब गई थी, स्थिति धीरे-धीरे संभल रही है.जीवन में अच्छे और सच्चे लोग बहुत कम मिलते हैं, ऐसे लोगों की भावनाओं की सदैव कद्र करने की सलाह देते हुए दीपावली पर सभी ग्राहकों, मित्रों को शुभकामनाएं दी. साथ ही कामना की कि सभी का जीवन सुख,समृद्थि और स्वास्थ्य के तीन एस के साथ ही यश से भी परिपूर्ण रहे.

आठ पीढ़ियों से सराफा व्यवसायी कट्टा सोनी परिवार ने इस व्यवसाय की विश्वसनीयता को ही सदैव महत्व दिया. माता-पिता की सेवा और बुजुर्गों के आशिर्वाद को कामाबी की सीढ़ी मानने वाले अमित कट्टा के मुताबिक दादाजी कुंवरलालजी तथा व्यवसायी और समाजसेवी रहे पिता गिरधरलालजी कट्टा सोनी के मार्गदर्शन में त्रिमूर्ति ज्वेलर्स लगातार कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ रहा है. ग्राहकों के विश्वास को ही उन्होंने अपनी सफलता का राज बनाया. साथ ही समय के साथ चलने और पुराने और नए दोनों के बीच समन्वय के साथ ही आभूषणों की डिजाइन तथा तरह-तरह के प्रयोग, ग्राहकों की पसंद को प्राथमिकता देने की जानकारी दी.

मानवता से बड़ा धर्म नहीं,सेवा से बड़ा कर्म नहीं

अतिथि संपादक डॉ.सैयद अबरार अहमद ने बताया

अमरावती- जीवन ऊपरवाले का दिया सबसे बड़ा उपहार है. इसका उपयोग जब हम मानवता की सेवा के लिए करते हैं तो निश्चित तौर पर ऊपरवाला भी प्रसन्न होता है और वह हमें तकलीफ नहीं होने देता है. हम अगर किसी का बहुत अच्छा नहीं कर सकते हैं तो हमें बुरा करने के बारे में भी नहीं सोचना चाहिए. हम जिस भी क्षेत्र में हैं, जब सेवाभाव को सामने रखकर उस क्षेत्र में काम करते हैं तो मिलने वाला संतोष करोड़ों की दौलत से बड़ा होता है. इस आशय का प्रतिपादन विदर्भस्तर के जाने माने दंत विशेषज्ञ और इस साल विदर्भ स्वाभिमान के दीपावली विशेषांक के अतिथि संपादक डॉ. सैयद अबरार अहमद ने किया. बोले तैसा चाले को जीवन का सूत्र बनाने वाले डॉ. सैयद अबरार बिना किसी पद पर रहने के बाद भी अमरावती शहर ही नहीं बल्कि जिले में अपार लोकप्रिय डाक्टर हैं. आज महंगाई के जमाने में जहां नए बीडीएस डाक्टर फीस ५०० रूपए लेते हैं, वहीं गरीबों की सदैव सेवा का संकल्प करने वाले डॉ. अबरार ने २० रूपए ही फीस रखी है. उनके अस्पताल में गरीब मरीजों का मेला लगता है.

दुवाएं नहीं जाती हैं बेकार

उनके मुताबिक जीवन में धन-दौलत जरूरत हो सकती है, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता है. पैसे श्रेष्ठ है, यह भी उतना ही ठीक है लेकिन मानवता के आगे पैसा सर्वश्रेष्ठ कभी नहीं हो सकता है. जीवन में जब भी दुवाएं लेने का मौका मिले तो लेना चाहिए, क्योंकि यह दुवाएं कब किसी बड़ी से बड़ी मुसीबत से हमें सुरक्षित निकाल लेंगी, इसका तो हमें भी अंदाजा नहीं हो सकता है. इसलिए जितना संभव हो सके, हमें मानवता, गरीबों की जितनी संभव है सेवा करने का प्रयास करना चाहिए. ३० साल से अधिक समय से दांत के गरीब मरीजों के मसीहा के रूप में उन्हें मरीज प्यार देते हैं. वे कहते हैं कि आज यह गरीबों की दुवाओं का ही असर है कि लाखों लोग उन्हें दिल से चाहते हैं और सदैव सहयोग करने के लिए तैयार रहते हैं.वे कोई नेता नहीं हैं लेकिन प्रतिदिन हजारों लोगों की जो दुवाएं उन्हें मिलती हैं, उसे वे जीवन का अनमोल प्यार और आशिर्वाद मानते हैं.

गरीबों से है अत्याधिक लगाव

बचपन से ही संघर्षों से जूझने वाले तथा गरीबों, दीन-दलितों पीड़ितों की सहायता का सदैव भाव रखने वाले और करने वाले डॉ. अबरार अहमद

ने कहा कि इन्सान का जीवन बड़े भाग्य से मिला है. माता-पिता के चरणों में जन्नत होता है,उनका आशिर्वाद जिस बेटे को मिल जाए, उसको किसी के पैर छूने की जरूरत ही नहीं पड़ती है. वे कहते हैं कि हम सभी भारतीय भाग्यशाली हैं, जिन्हें इस पवित्र भूमि में जन्म मिला है. भारत की विश्व कल्याण की धारणा की खूबी गिनाते हुए डॉ. अबरार अहमद ने कहा कि राष्ट्रधर्म का पालन हर नागरिक को करना चाहिए. सभी को मानवता से प्रेम करने के साथ ही हर उस पीड़ित व्यक्ति की मदद करने का प्रयास करना चाहिए, जिसे मदद की जरूरत हो. ऐसे से भाईचारा और यह बढ़ने पर राष्ट्रीय एकता सदैव बढ़ेगी. एक हाथ से खींचने वाले की तुलना में हजारों हाथों से मदद करने वाले परवरदिगार से बड़ा कौन हो सकता है. हमारी नेकी कभी बेकार नहीं जाती है. जीवन में जब भी मौका मिले, नेकी के माध्यम से आदर्श मानव होने का कार्य सभी को करना चाहिए. डॉ. अबरार अहमद के मुताबिक हर क्षेत्र में कमियां हैं. ऐसे में जब हम अच्छे लोगों को मौका देते हैं तो निश्चित तौर पर अच्छाई ही होना है. लेकिन हम जब स्वार्थ में पड़कर गलत लोगों को मौका देते हैं तो निश्चित तौर पर अराजकता, महंगाई, बेरोजगारी के रूप में उसका भी दर्द हमें ही झेलना पड़ता है.

मजहब नहीं सिखाता, आपस में वैर करना

बचपन से ही आदर्श विचारों से परिपूर्ण रहने वाले और शहर में भी सर्वधर्म समभाव के परिचायक रहने वाले डॉ. अबरार अहमद सभी में अपार लोकप्रिय हैं. जितने मित्र उनके मुस्लिम समाज में हैं, उससे भी कई गुना अधिक हिन्दू मित्र उन्हें सम्मान देते हैं. शहर में उनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है. वे कहते हैं कि आज किसे फुर्सत है. केवल मुट्ठीभर लोगों को छोड़ दिया जाए तो दोनों कौम के हर व्यक्ति के पास अपने पास स्वयं का ही पलंजर इतना है कि कहीं दूसरी ओर वह देखने का समय ही नहीं निकाल पाता है. मजहब कभी भी वैर करना नहीं सिखाता है. प्रेम में सबसे बड़ी ताकत होती है. जब हम इसे बांटते हैं तो यह सदैव बढ़कर ही मिलता है. दीपावली के पावन पर्व पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए डॉ. अबरार अहमद ने कहा कि दीपक से बड़ा त्यागी और कौन हो सकता है. जो स्वयं जलता है और अन्यों को रोशनी देता है. इन्सान को भी यही भाव रखना चाहिए. जब अच्छा करते हैं तो निश्चित तौर पर उसकी गणना यहां और वहां दोनों तरफ होती है.

मानवता से बड़ा धर्म नहीं

डॉ.पंकज घुंडियाल मानव सेवा में समर्पित व्यक्ति

जीवन में अपने लिए सभी जीते हैं लेकिन कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जिनका जीवन अन्यों के लिए आदर्श होता है. स्वयं के साथ हमें समाज और राष्ट्र के लिए भी जीने का प्रयास करना चाहिए. मानवता की सेवा और किसी जरूरतमंद की मदद जब हम करते हैं तो अपार संतोष मिलता है. यही संतोष कई बार हमारे जीवन में अपार खुशियां लाने का कार्य करता है. यह मत बहुगुणी व्यक्तित्व के धनी डॉ पंकज घुंडियाल ने व्यक्त किया.

उन्होंने कहा कि माता-पिता के आशीर्वाद और प्रभु की कृपा से जीवन में हर सफलता उन्हें मिली है. माता-पिता की सेवा और सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले वे क्रिकेट के बेहतरीन खिलाड़ी भी हैं. इंसान के रूप में इंसान की मदद करने का संदेश जहां भी देते हैं वहां स्वयं भी गरीब मरीजों के लिए हर संभव सहयोग करने के लिए तैयार रहते हैं. उनके स्वभाव के कारण उन्होंने जहां हजारों मित्र परिवार तैयार किया है वहीं पत्नी तथा परिवार सामाजिक कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहता है. उन्होंने दीपावली के पावन पर्व पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए दीपक से त्याग की प्रेरणा लेने का आग्रह किया. वह कहते हैं कि जितना संभव हो सके हमें भी अपनी क्षमता के मुताबिक लोगों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए. धन दौलत की बजाय हमारे नेक कर्म ही हमारे असली साथी होते हैं. सभी को प्रेम व खुशियां बांटने का संदेश उन्होंने विदर्भ स्वाभिमान के माध्यम से दिया.

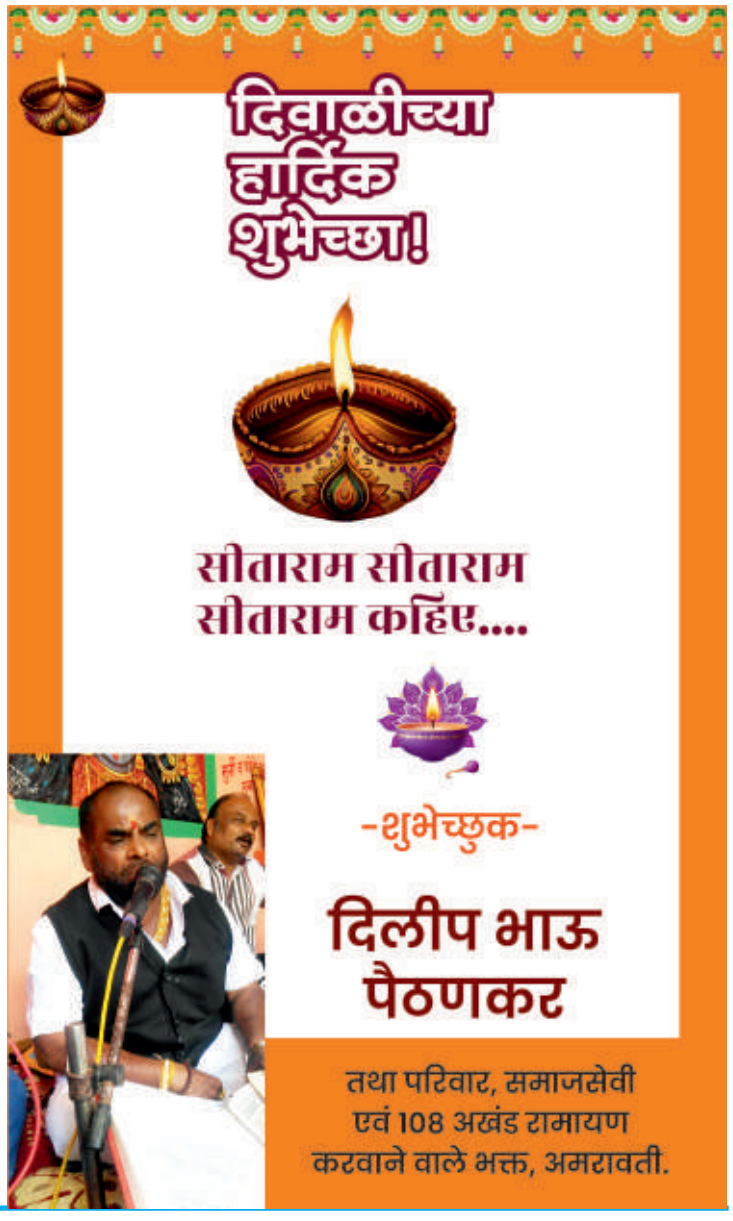

फैशन का साम्राज्य शून्य से शिखर तक श्रद्धा फॅमिली शॉपी मॉल

१७ साल की परंपरा के साथ आज भी बरकरार है ग्राहकों का विश्वास

लेडिज वेअर के साथ संपूर्ण फैमिली शॉपिंग का हब बना 'श्रद्धा फैमिली शॉप'

अमरावती– स्त्री के सौंदर्य को गहनों के साथ कपडें भी निखारते है. भारतीय संस्कृति में महिलाओं का पोशाख 'साडी' माना गया है. इस कारण पौराणिक काल से महिलाएं ज्यादा समय साडियों में ही नजर आई. धर्म, जाति के अनुसार इस पोशाख को आधुनिकीकरण का फ्लेवर चढाया गया, लेकिन आज भी महिलाएं जब नववारी, साडी परिधान करती है, तो देखने वालों की नजरे रुक जाती है. इसी पारंपारिक पोशाख के साथ कपडा व्यापार में अपनी जगह बनाने वाले 'श्रद्धा' परिवार ने समय के साथ खुद को ब्रान्ड बना लिया है. १७ साल की कडी मेहनत और संचालकों के प्रति ग्राहकों का विश्वास 'श्रद्धा साडीज' और 'श्रद्धा फैमिली शॉप' सफलता की उंचाईयों तक ले जाने में सहायक साबित हुआ है.

साल २००६ रमेश गिडवानी, सुरेश गिडवानी तथा पुरण लाला ने गारमेट की दुनिया में अपना पहला कदम रखा. उस समय सामान्य से लेकर मध्यमवर्गीय परिवार की महिलाओं को किफायती दाम में डिजाईनर साडियों का कलेक्शन उपलब्ध करवाने का निर्णय लेते हुए जयस्तंभ चौक स्थित तखतमल इस्टेट में प्रतिष्ठान का शुभारंभ किया गया. उस समय यह प्रतिष्ठान ङ्कश्रद्धा साडीज्फ के नाम से जाना गया. धीरे–धीरे संचालकों की सेवा का विस्तार होता गया. १० बाय १० का यह प्रतिष्ठान समय के साथ अपना प्रतिष्ठान रुप बदलने लगा. ग्राहकों की डिमांड पर इस प्रतिष्ठान में साडियों का कलेक्शन भी बढता गया. साथ ही ग्राहकों का विश्वास और गहराता गया.

साल २०११ यानी करीब पांच वर्ष बाद 'श्रद्धा साडीज' का बडे शोरुम में विस्तार हुआ. इस विस्तार

के साथ 'श्रद्धा साडीज' ने अपना रुप बदलते हुए ५ हजार स्वे. फीट के प्रतिष्ठान का निर्माण किया गया. यहां ग्राहकों को जहां पहले मात्र ५०० रुपये तक के वस्त्र मिलते थे. उनकी किमते और समय के साथ स्टाईल भी बदलने लगा. अब महिलाओं को डिजाईनर कलेक्शन के साथ पैठणी, सिल्क साडियां, कांजीवरम, बनारसी साडियां भी उपलब्ध होने लगी.

साल २०१८ में 'श्रद्धा साडीज' के संचालकों ने अपनी का विस्तार पर बोरगांव धर्माले स्थित कपडों के होलसेल हब बिजीलैन्ड में 'श्रद्धा साडीज'के भव्य शोरुम का शुभारंभ किया. यहां करीब २० हजार स्वे. फीट में निर्मित प्रतिष्ठान का नामकरण करते हुए 'श्रद्धा साडीज'अब 'श्रद्धा फैमिली शॉप' के नाम से विख्यात हुई. यहां अब ५०० रुपये से लेकर ५० हजार रुपये तक की रेज में महिलाएं, पुरुष और बच्चों के लिए एक ही छत के नीचे आकर्षक और डिजाईनर कपडों का कलेक्शन उपलब्ध करवाया जाता है. केवल यहीं नहीं अब दुल्हा–दुल्हन के लुक को और भी आकर्षक बनाने 'श्रद्धा फैमिली शॉप' में कपडों का वेडिंग कलेक्षन भी रखा गया है. जिसके कारण अब ग्राहकों की 'श्रद्धा फैमिली शॉप' पहली पसंद बनता जा रहा है.

श्रद्धा संचालकों ने जीता ग्राहकों का विश्वास

बता दे कि तीन दोस्तों मिलकर 'श्रद्धा साडीज' की नीव रखी थी. लेकिन समय के साथ इस परिवार का भी प्रतिष्ठान विस्तार के साथ विस्तार हुआ. आज परिवार में रमेशलाल गिडवानी, सुरेश गिडवानी, पुरण लाला के साथ रोशन लाला, अमीत सेवानी, सागर गिडवानी, राजेश भाटीया, सुरेश पंजवानी, दिलीप साबवानी, विजय गिडवानी का भी समावेश है. यह परिवार की इस नीव को मजबुती प्रदान करने तथा ग्राहकों को बेहतरीन सेवा देने के लिए अपनी अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा एवं विश्वास के साथ पूरा किया है. जिसके कारण ङ्कश्रद्धाफआज अपने आप में एक ब्रान्ड बन चुका है.

अग्रणी सेवा व सही दामों ने किया राज

'श्रद्धा' परिवार के लिए सेवा व सही दाम हमेशा अग्रणी रहे है. जिसके कारण 'श्रद्धा' परिवार ने कम समय में ग्राहकों के दिलों में अपनी अलग जगह बनाई है. यहीं कारण है कि तीज त्योहार हो या पारिवारीक कार्यक्रम ग्राहकों की पहली पसंद ङ्कश्रद्धाफ होता है. इसी विश्वास को आगे भी बरकरार रखते हुए आने वाले समय में ङ्कश्रद्धा फैमिली शॉपीफ का जल्द ही आनेवाले समय में भव्य विस्तार किया जा रहा है। १ लाख स्वे. फ़ीट वातानुकूलित शोरूम बनने जा रहा है। जहां ग्राहकों को और भी अधिक कपडों की वैरायटी के साथ अपने लूक को निहारने का मौका मिलेगा.

जीवन में स्वभाव का ही पड़ता है प्रभाव

अमरावती– शहर ही नहीं तो राष्ट्रीय स्तर के होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. रामगोपाल तापड़िया के मुताबिक जीवन में हंसते रहो और हंसाते रहो का भाव जो लोग रखते हैं, ऐसे लोगों को कभी भी तकलीफ नहीं होती है. वे जितने बेहतरीन डॉक्टर हैं उससे भी बेहतरीन और मानवता की सेवा को अत्यधिक महत्व देने वाले बहुगुणी व्यक्तित्व हैं. जीवन में स्वभाव और प्रेम का सर्वाधिक प्रभाव पड़ने और संयुक्त परिवार के जैसा आदर्श परिवार हो नहीं सकता है. वे कहते हैं कि जब हम संयुक्त परिवार में रहते हैं तो तो खुशियों के साथ ही दुख भी बंट जाता है और इसका पता नहीं चल पाता है.

बचपन से ही मेधावी छात्र रहने वाले डॉक्टर तापड़िया को मामा डॉ.रामदेव सिकची जी के यहां रहने के दौरान डॉक्टर बनने की इच्छा जागी. बचपन से ही मेहनती तथा समर्पित रहने के कारण उन्होंने इस क्षेत्र में कदम रखने का फैसला किया. ढोले कॉलेज से डीएचबी, औरंगाबाद विश्वविद्यालय से डीएचएमएस की डिग्री हासिल करने के बाद यहीं से उन्होंने एमडी की डिग्री हासिल की. सेवा के साथ सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले डॉक्टर साहब को अभी तक कई दर्जन पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं. गांधी पीस फाउंडेशन नेपाल द्वारा उन्हें २०२४ में डॉक्टरेट का सम्मान देकर नवाजा गया.

जीवन में पत्नी तारा का हर सुख दुख में साथ रहने और बेटी अभियांत्रिकी महाविद्यालय में प्राध्यापक तथा दामाद जी भी प्राध्यापक हैं. दूसरी बेटी आईटी कंपनी में वरिष्ठ अधिकारी है. जबकि बेटा डॉ.सारंग अमरावती शहर के जाने–माने होम्योपैथी डॉक्टर हैं. घर में आदर्श बहू की जिम्मेदारी निभाने वाली डॉ.सोनाली भी घर और अस्पताल में बेहतरीन समन्वय करते हुए आगे बढ़ रहे हैं. वे कहते हैं कि संयुक्त परिवार आज की जरूरत है. यह परिवार रहने पर सुख और दुख दोनों बांटने में आसानी होती है और जीवन खुशियों के साथ बीत जाता है. उन्होंने दीपावली पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए अपने से कमजोर वर्गों को भी इस खुशी का हिस्सा बनाने का आग्रह किया.

बहुगुणी व्यक्तित्व डॉ.रामगोपाल तापड़िया ने कहा

धर्मसेवा-जनसेवा को देते हैं सदैव प्राथमिकता

श्री अंबादेवी मंदिर है अमरावती की शान, रोज देश भर से आते है सैकडो भाविक

अमरावती- विदर्भ की कुलस्वामिनी अंबादेवी का मंदिर लाखों भक्तों का जहां आस्थास्थल है, वहीं जागृत मंदिर के रूप में इसकी पूरे देश में ख्याति है. हर साल यहां पर लाखों की संख्या में भक्त आकर दर्शन कर अपनी मन्नत पूरी करते हैं. श्री अंबादेवी संस्थान के प्रमुख के नाते मैं और सभी पदाधिकारी तथा कर्मचारी भक्तों की सुविधाओं को देने तथा सुविधाजनक बनाने के लिए प्रयास करते हैंसमूचे भारत वर्ष से अंबादेवी का दर्शन करने के लिए लाखों की संख्या में भक्त हर साल आते हैं। स्थानीय तथा देशभर से आने वाले भक्तों की सुविधा को प्राथमिकता के साथ ही दर्शन जल्द से जल्द कैसे हो सके, इस दिशा में समुचित प्रयास किया जाएगा। मां अंबा की मूर्ति को उसी स्थान पर कायम रखते हुए अंबादेवी के भव्य मंदिर का निर्माण भी जल्द से जल्द करने की दिशा में भी पहल की जाएगी। इस आशय की बात श्री अंबादेवी संस्थान के नवनिर्वाचत अध्यक्ष और जाने-माने अधिवक्ता एड. दीपक श्रीमाली ने कही। मंदिर में रोज २५० से ३०० भक्त और नवरात्रि के दौरान रोज हजारों भक्तों के दर्शन करने की जानकारी दी।

विदर्भ स्वाभिमान को दिए साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा धार्मिकता के साथ ही सेवाभावी उपक्रमों को भी महत्व दिया जाता है। इस कड़ी में संस्थान द्वारा अस्पताल निर्माण की दिशा में पहल की जा रही है। दो साल में हास्पिटल की इमारत का काम शुरू हो सकता है। इसमें गरीब तथा जरूरतमंदों की जांच और उपचार करने का प्रयास किया जाएगा। संस्थान द्वारा संचालित लाइब्रेरी के माध्यम से अभी तक हजारों छात्रों को स्पर्धा परीक्षा में सफलता मिली है। धार्मिक के साथ ही सामाजिक दायित्व की पूर्ति के लिए अन्य कई उपक्रम भी चलाने की भूमिका संस्थान के ट्रस्टियों की है। उन्होंने बताया कि न केवल अमरावती,महाराष्ट्र बल्कि मां अंबादेवी का दर्शन करने के लिए देशभर से साल में लाखों भक्त आते हैं। संस्थान के भक्त निवास में रोज १५० से २०० भक्त आते हैं। भक्तों के आवास की व्यवस्था यहां की गई है। बुजुर्गों, दिव्यांगों के जल्द दर्शन की दिशा में भी प्रयास करने और भक्तों को अधिकाधिक सुविधाएं देने को प्राथमिकता देने की बात भी कही। सभी के प्रयासों से मंदिर को शानदार ढंग से विकसित करने का प्रयास रहने की बात कही।मंदिर में जगहाभाव के कारण नि:शुल्क अन्नदान कार्यक्रम में दिक्कत आ रही है। बावजूद इसके अध्यक्ष के रूप में वे अन्नदान का कार्यक्रम हर दिन करवाने की दिशा में प्रयासरत हैं। भक्तजनों के आर्थिक सहयोग के साथ ही संस्थान द्वारा धार्मिक के साथ सामाजिक उपक्रमों को चलाने पर जोर देने की बात कही। साथ ही आगामी समय में और भी कई उपक्रम संस्थान द्वारा शुरू करने और भक्तों को लाभान्वित करने का प्रयास करने की जानकारी दी। भविष्य में मंदिर का मूर्ति यथास्थान पर कायम रखते हुए भव्य मंदिर के निर्माण के साथ रोज नि:शुल्क अन्नदान की योजना है. इस आशय का मत संस्थान के नवनिर्वाचित अध्यक्ष और जाने-माने अधिवक्ता दीपक श्रीमाली ने व्यक्त किया. मंदिर में देश ही नहीं बल्कि विदेश से भी बड़ी संख्या में भक्त आते हैं. पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभाताई पाटील, शिवसेना प्रमुख बालासाहब ठाकरे भी जब भी अमरावती आते थे तो वे भी अंबादेवी मंदिर में दर्शन करते थे. मंदिर में रोज २५० से ३०० भक्त और नवरात्रि के दौरान रोज हजारों भक्तों के दर्शन करने की जानकारी दी.उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा धार्मिकता के साथ ही सेवाभावी उपक्रमों को भी महत्व दिया जाता है.धर्म के साथ ही सेवाभाव को सदैव महत्व देने की जानकारी उन्होंने दी. इस कड़ी में इस कड़ी में संस्थान द्वारा अस्पताल निर्माण की दिशा में पहल की जा रही है. दो साल में हास्पिटल की इमारत का काम शुरू होने की जानकारी दी

आदर्शमित्र, धर्म व सेवा के संगम है प्राचार्य संजय शिरभाते

जीवन में कुछ लोगों का साथ फूलों के जैसे होता है. ऐसे लोग हमेशा सेवा भाव से काम करते हैं लेकिन अपना गुणगान कभी नहीं करते हैं. इनका मन अति सुंदर होता है इसके साथ ही उनके दिल में सभी के लिए अपार प्रेम होता है. ऐसे ही लोगों में शामिल है उच्च विद्या विभूषित और आदर्श माता-पिता की संतान पूर्व प्राचार्य और हमारे अजीज मित्र संजय शिरभाते. आज अमरावती ही नहीं बल्कि समूचे विदर्भ में अपने स्वयं की पहचान रखने के बावजूद उनकी विनम्रता उन्हें सदैव भीड़ में भी अलग चेहरे के रूप में सम्मानित करती है. स्वभाव में विनम्रता, हर विषय पर गहरा ज्ञान, अंग्रेजी के जाने-माने विद्वान के साथी भोलेनाथ ग्रुप तथा कई सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी रहने के बाद भी आज भी आदर्श किसान के रूप में खेती बाड़ी करते हैं. माता-पिता को जीवन में आदर्श मानने वाले तथा पत्नी को आदर्श जीवन संगिनी मानने वाले मित्रों में संजू भाऊ के नाम से लोकप्रिय शिरभाते सर का अपनापन जहां किसी को भी प्रभावित कर देता है वहीं अगर उन्हें

कोई बात बुरी लग जाती है तो स्पष्ट रूप से वह तुरंत बोलने का साहस भी रखते हैं.

विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि आज अपनापन और प्रेम भी कहीं ना कहीं स्वार्थी बनता जा रहा है. बड़े भाग्य से ऐसे समर्पित मित्र और परिवार मिलता है जो सभी की भावनाओं को समझने का

प्रयास करता है. वह कहते हैं कि जब हम अच्छा अच्छी सोच के साथ करते हैं तो प्रभु कभी हमें निराश नहीं करते हैं. बढ़ती किसान तथा युवाओं की आत्महत्याओं को चिंता नहीं है बताते हुए वह कहते हैं कि मेहनत, समर्पण से किया गया कोई भी कार्य कभी सफल नहीं हो सकता है. संयुक्त परिवार को आदर्श परिवार मानने वाले संजू भाऊ मित्रों के जहां चहेते हैं, वहीं उनकी सादगी किसी को भी प्रभावित करती है. उच्च विद्या विभूषित होने के बाद भी आज भी खेत में जाकर खेती करने के साथ पसीना बहाना नहीं बोलते हैं. दीपावली की सभी को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि समाज के घटक के नाते हर व्यक्ति को अपनी ओर से हर संभव सामाजिक कार्य तथा मानवीय कार्यों में योगदान देने का प्रयास करना चाहिए. इससे मिलने वाली प्रेरणा और संतोष को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता. जीवन में प्रेम और खुशियां सभी को बांटने और अहंकार का त्याग करते हुए स्वभाव तथा विनम्रता से सभी के दिल में स्थान बनाने का अनुरोध करते हैं.

प्रेम बांटते रहें, सदैव प्रसन्न रहेंगे

सतीश परदेसी की सलाह

जीवन में जो लोग सदैव खुशियां बांटते हैं, उनकी खुशियां कभी कम नहीं होती हैं. खुशियों का आधार प्रेम और अपनापन होता है. जो लोग जीवन में यह समझ जाते हैं, उनके जीवन में कभी परेशान नहीं होती है.दीपावली भी यही सीख देती है. हमें स्वयं के साथ ही अन्यों को सदैव खुश रखने का प्रयास करना चाहिए. जब हम ऐसा करते हैं तो अपार खुशी मिलती है. सदैव अच्छा सोच रखते हुए मेहनत, लगन और समर्पण के साथ काम करने का प्रयास करना चाहिए. इससे जीवन में सफलता और संतोष दोनों ही मिलेगा. माता-पिता की सेवा और बेहतरीन स्वभाव का तरक्की में महत्वपूर्ण स्थान होता है. इसलिए जितना संभव हो सके, सभी से अच्छे से रहें. अच्छे से रहने के चलते किसी के भी दिल में स्थान बना लेते हैं. घर में अच्छा रहने वाला व्यक्ति बाहर अच्छा रहता है. बच्चों को बचपन से संस्कार देना चाहिए. दीपावली त्याग का पर्व है, इसमें अपने से क़मजोर व्यक्ति की यथासंभव मदद करने का प्रयास करना चाहिए. जीवन में कुछ लोग संबंधों को अत्याधिक तरजीह देते हैं. बिना किसी तरह के गाजा-बाजा किए भी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का न केवल निर्वहन करते हैं बल्कि अन्यों के लिए भी प्रेरणादायी व्यक्तित्व बनते हैं. कुछ इसी तरह के व्यक्ति हैं राजापेठ के एच.हीरालाल एन्ड सन्स के संचालक सतीश परदेसी. माता-पिता को जीवन में अत्याधिक महत्व देते हैं. उनके मुताबिक जीवन देने के साथ ही हमें लायक और सम्मानजनक बनाने के सफर में माता-पिता का त्याग और उनकी भूमिका का कर्ज कभी उतारा नहीं जा सकता है. उन्होंने सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी. स्वस्थ, सुखी और समृद्धि की कामना की.

भावपूर्ण आदरांजली

ममता की मूरत थीं चाची सौ.द्रोपदी दुबे

आदर्श संस्कारों की थी जननी, आत्मीयता थी विशेषता

जीवन में कुछ लोग दिखने में सख्त लेकिन दिल के साफ होते हैं. ऐसे ही लोगों में शामिल थीं मेरी चाची सौ.द्रोपदी शिवप्रसाद दुबे. उनका दीपावली के दिन स्वर्गवास हो गया. पिछले कुछ दिनों उनकी तबियत खराब हुई थी बेटे राजेश और सर्वेश ने मां को इलाहाबाद के अस्पताल में भर्ती कराया था, उनकी तबियत १ नवंबर को अचानक खराब हुई और असपताल में ले जाते समय बीच रास्ते ही उनका देहांत हो गया. वे ७० साल की थी. उनके पश्चात पति शिवप्रसादजी, पुत्र राजेश, सर्वेश, चार बेटियों, नाती-पोतों का भरापुरा परिवार है.

आदर्श मां के रूप में जहां उन्होंने बच्चों को बेहतरीन संस्कार दिए, वहीं उनकी मेहनत और लगन,समर्पण के कारण आज दोनों ही बेटे जहां आदर्श भाई के उदाहरण हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक,धार्मिक कामों में सदैव अग्रणी रहते हैं. उनके देहांत का गहरा सदमा पूरे दुबे परिवार पर है लेकिन इसके साथ ही जिसने जन्म लिया है, उसे एक न एक दिन जाना ही है, यह भी उतना ही तय है. बचपन से ही मुझे भी उनका मां जैसा प्यार मिला है. चाचाजी जहां धार्मिकता से ओतप्रोत रहने वाले व्यक्ति हैं, वहीं गरीबी और अभावों के दिनों से लेकर आज परिवार समृद्धि के मार्ग पर आगे रहने में चाचीजी का मार्गदर्शन था. आज दुबे परिवार न केवल धौरहरा बल्कि आसपास के क्षेत्र में भी सम्मानित परिवार के रूप में जाना जाता है तो इसका श्रेय परिवार के बडों का ही है. उनका जाना दुबे परिवार के लिए अपूरणीय क्षति है. हम प्रभु चरणों में कामना करते हैं कि प्रभु अपने चरणों में उन्हें स्थान दें और यह बडा दुःख सहन करने की प्रेरणा पूरे दुबे परिवार को दें. चाचीजी के आदर्श विचार और सोच सदैव हम सभी का मार्गदर्शन करती रहेगी. ओम शांति...

-सुभाषचंद्र जे. दुबे

अमरावती में भी दीपावली पर बाजार रहा गुलजार

विदर्भ स्वाभिमान, ३० अक्तूबर

अमरावती– दीपावली का पर्व केवल त्यौहार नहीं बल्कि देश में करोड़ों लोगों को रोजगार देने का माध्यम बनने वाला त्यौहार होता है. यही कारण है कि इस पर्व पर अमरावती के सभी व्यवसाय गुलजार हैं. कपड़ा, सराफा, किराणा, पेंट दुकान के साथ ही केले की पत्ती से लेकर फूलवाले सभी को रोजगार मिलता है. यह त्यौहार आर्थिक क्षेत्र को बूस्टर प्रदान करती है. यही कारण है कि इस त्यौहार को खुशियों का प्रतीक पर्व कहा जाता है. अमरावती शहर के जवाहर रोड, चित्रा चौक, कपड़ा बाजार, नमूना गली के साथ ही हर क्षेत्र ग्राहकों से गुलजार है. इस पर्व को खुशियों के साथ ही आर्थिक समृद्धि का पर्व कहना गलत नहीं होगा.

अमरावती शहर के बाजार में करोड़ों रूपए का व्यवसाय दीपावली पर होता

है. बाजारों में दीपावली की रौनक बढ़ गई है. शहर की मुख्य सड़कों पर साज-सज्जा और त्योहार की सामग्री की दुकानें सज गई हैं. खरीदारी के लिए दिन में भारी भीड़ रही. यातायात व्यवस्थित करने के लिए पुलिस को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी. धनतेरस पर्व के लिए नए बर्तन की दुकानें सज गई हैं. ग्रामीण क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में लोगों का आगमन होता है और सभी के रोजगार के साथ ही खुशियां बांटने का मौका मिलता है. अमरावती जिला परिषद कर्मचारी संगठन द्वारा निराधार बच्चों को वस्त्रों तथा जरूरत की साहित्य का वितरण किया जाता है, यह निश्चित ही सराहनीय कदम है. इस पर्व की खुशियां अगर हम सभी जरूरतमंदों, निराधार बुजुर्गों के साथ ही पीड़ितों के साथ बांटें तो निश्चित तौर पर यह दीपावली सदैव यादगार रहेगी. लक्ष्मीजी की मूर्ति की दुकानें भी इर्विन से लेकर रविनगर, गाड़गेनगर, नवाथे प्लाट, बडनेरा में कई स्थानों पर लग गई हैं. दीपावली पर्व का उल्लास बाजार में छाया हुआ है. बृहस्पतिवार को गांधी चौक, राजकमल चौक, जयस्तंभ चौक, मालवीय चौक के साथ ही गाड़गे नगर के पंचवटी चौक, सराफा बाजार, कपड़ा मार्केट में दुकानें कई दिन पहले से सज गईं. मां लक्ष्मी और भगवान श्रीगणेश की मिट्टी की मूर्ति तथा वॉल पेंटिंग की बड़ी तादाद में बिक्री हुई. घर की साज-सज्जा के लिए फूलों की झालरें और अन्य सामग्री खरीदी गईं. गेंदे और अशोक के पत्तों की लड़ियां बड़ी संख्या में बिकी. त्योहार के चलते मंडी में फूलों की आवक बढ़ गई है. खील, बतासे, मोमबत्ती, कंदील की दुकानों पर भी खरीदारों का मेला लगा रहा. धनतेरस पर्व के लिए सर्राफा बाजार और भगत सिंह रोड स्थित स्वर्ण आभूषण की दुकानों पर रौनक बढ़ गई है. शहर के मुख्य बाजारों को दीपावली पर सजाया गया है. नईमंडी में चौड़ी गली, वकील रोड, गऊशाला रोड, भोपा रोड इलाकों में सड़कों पर बाजार जगमग हैं. मिठाइयां और रेवड़ी की दुकानों पर भारी भीड़ है. शहर की यातायात व्यवस्था और भीड़ को संभालने के लिए पुलिस प्रशासन ने कड़े बंदोबस्त किए हैं. शहर पुलिस आयुक्त नवीनचंद्र रेड्डी के साथ ही जिला पुलिस अधीक्षक विशाल आनंद सिंगूरी की भी सराहना की जानी चाहिए कि चुनाव और दीपावली तथा अन्य पर्व एक साथ आने के बाद भी व्यापक पुलिस बंदोबस्त किया है. सभी पुलिस वालों का अभिनंदन किया जाना चाहिए कि वे तमाम पारिवारिक खुशियों को छोड़कर भी ड्यूटी के माध्यम से आम जनता की सेवा में चौबीसोंघंटे सेवारत रहते हैं.

सामाजिक एकता ही बनाती है मजबूत

श्री सरयूपारिण ब्राह्मण सभा के सचिव प्रा.मनीष दुबे ने कहा

विदर्भ स्वाभिमान,३० अक्तूबर

अमरावती– किसी की समाज की प्रगति समझदारी, एक–दूसरे को सहयोग की भावना तथा एकता से ही होती है. जिस समाज में एकता होती है, वही समाज सदैव आगे बढ़ता है. ब्राह्मण समाज बुद्धि, बल सभी में आगे है लेकिन इस समाज में जैसा प्रेम, सहयोग की भावना होनी चाहिए, वह कहीं कम दिखाई देती है. जिस दिन इसकी पूर्ति हो जाए, निश्चित तौर पर उस दिन से इस समाज का इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना शुरू हो जाएगा. इस आशय का मत शिक्षाविद और श्री सरयूपारिण ब्राह्मण सभा के सचिव प्रा.मनीष दुबे ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान के दीपावली विशेषांक को दिए साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि आज जमाना एकता का है. राजनीति सहित किसी भी क्षेत्र में एकता के बगैर तरक्की असंभव है. हमारे लिए ज्ञान देना आसान होता है लेकिन जहां सुमति तहं सम्पति नाना वाली बात को हम भूल जाते हैं. समाज की एकता का जो प्रयास किया जा रहा है, वह सराहनीय है. समाज के अध्यक्ष डॉ. सतीश तिवारी, शारदा प्रसाद तिवारी के साथ ही सभी पदाधिकारी जिस तरह से समाज के लिए काम कर रहे हैं, वह निश्चित तौर पर सराहनीय है. हमें यह ध्यान देना चाहिए कि बंटेंगे तो कटेंगे लेकिन एकजुट रहेंगे तो निश्चित तौर पर हमारी पीढियों को कुछ देकर जाएंगे. आज समय के साथ सामाजिक एकता की अत्याधिक जरूरत है. समाज की एकता सभी के लिए हितकारी होती है. आपस में ही लडने और मतभेद पालने की बजाय सभी मिलकर काम करें तो निश्चित तौर पर समाज मजबूत होगा और राजनीति के साथ ही हर क्षेत्र में उसकी भागीदारी बढेगी. दीपावली को सभी समाजबंधुओं से एकता का संकल्प लेने और सामाजिक कामों में सहभागिता बढाने का आग्रह किया. उनके मुताबिक एकता की ताकत का एहसास सभी को करना चाहिए. हम सभी को एकता का संकल्प लेकर ब्राह्मण समाज की सभी शाखाओं को एकजुट करने और बडी ताकत बनने का आग्रह किया. अंत में सभी देशवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी.

दिवाली से जुड़े कुछ तथ्य

आइए दिवाली से जुड़े कुछ तथ्यों के बारे मे जानते हैं

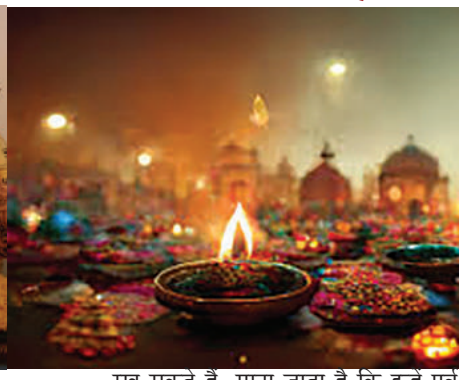

दिवाली हिन्दू धर्म का प्रमुख त्योहार है, जिसे विभिन्न भागों में विशेष रूप से मनाया जाता है, जैसे कि लक्ष्मी पूजा, धनतेरस, छोटी दिवाली, महापर्व, और भैया दूज.

इस त्योहार का मुख्य सिंबल दीपक है, जो अंधकार को प्रकाश में बदलता है और आशा, उपलब्धि, और खुशियों की ओर संकेत करता है.

दिवाली के दिन, लक्ष्मी माता की पूजा की जाती है, जिसे धन, संपत्ति, और सफलता की आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए किया जाता है.

दिवाली के दिन, लोग विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट खाने बनाते हैं और उन्हें दोस्तों और परिवार के साथ साझा करते हैं.

दिवाली के मनोरंजन का हिस्सा पटाखे होते हैं, जिन्हें बच्चे और वयस्क दोनों खुशी–खुशी जलाते हैं.

दिवाली एक सामाजिक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो लोगों को एक साथ आने और एक–दूसरे के साथ समय बिताने का मौका प्रदान करता है.

दिवाली के त्योहार के पीछे विभिन्न धार्मिक कथाएँ होती हैं, जिनमें रामायण के आदर्श परिपत्र, नरकासुर वध, और गोवर्धन पूजा शामिल हैं.

दिवाली के ५ दिन कौन से हैं?

दिवाली के पांच दिन हैं धनतेरस, नरक चतुर्दशी, लक्ष्मी पूजा, गोवर्धन पूजा और भाई दूज.

दीया का मुंह किस दिशा में होना चाहिए?

आप दीयों को पूर्व या उत्तर दिशा में भी रख सकते हैं. माना जाता है कि इन्हें पूर्व दिशा में रखने से परिवार को स्वास्थ्य लाभ होता है, जबकि उत्तर दिशा में रखने से धन की प्राप्ति होती है. टिप: मंदिर के दीये और दीपक दक्षिण दिशा में रखने से बचें.

छोटी दिवाली को क्यों कहते हैं नरक चतुर्दशी?

हिंदू मान्यता के मुताबिक, इस दिन भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण ने राक्षस नरकासुर का वध किया था. नरकासुर के बंदी गृह में १६ हजार से ज्यादा महिलाएं कैद थीं, जिन्हें भगवान कृष्ण ने आजाद कराया था. तब से छोटी दिवाली को नरक चतुर्दशी के तौर पर मनाया जाता है.

मेहनत, राष्ट्रभक्ति और समर्पण के संगम है प्रमोद कोंडे

अमरावती-जीवन में बहुत कम लोग ऐसे आते हैं जिनसे कुछ सीखा जा सकता है. ऐसे ही लोगों में शामिल हैं वल्लभनगर निवासी और सीआरपीएफ में १० साल तक देश की रक्षा करने वाले प्रमोद भगवंतराव कोड़े. बचपन से ही संघर्ष वाली स्थितियों से जोड़ते हुए उन्होंने जीवन में कभी हार नहीं मानी. चांदूर बाजार से अमरावती आने के बाद किसी भी काम को छोटा नहीं समझते हुए उन्होंने सदैव मेहनत, लगन और ईमानदारी को अपनी ताकत बनते हुए सदैव इस पर चलने का प्रयास किया. प्रमोद भाऊ का जन्म २५ अक्टूबर १९६२ को हुआ. रिश्तो के मामले में सदैव गंभीर रहने वाले प्रमोद भाऊ संयुक्त परिवार के हिमायती हैं. चार भाई तीन बहनों का उनका परिवार आज भले ही अलग-अलग रहता है लेकिन आज भी अलगाव उनके परिवार में नहीं हुआ है.

विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि आज तनाव का सबसे बड़ा कारण परिवार में अशांति रहता है. इसके कारण विभिन्न बीमारियां घेर लेती हैं और जीवन में मुसीबतें बढ़ जाती है. जिस घर में प्रसन्नचित वातावरण रहता है वहां पर कभी भी बीमारी का प्रमाण कम देखा जा सकता है. परिवार की एकता से बड़ी ताकत नहीं हो सकती है. उनका कहना है कि राष्ट्र धर्म हर भारतीय के लिए सबसे पहले होना चाहिए. उच्च विचार रखने वाले प्रमोद भाऊ ने शादी भी सादगी से की. वे कहते हैं कि जब तक हाथ पैर चला रहे हमें स्वयं को खाली नहीं रखना चाहिए. दुनिया में जो आदमी व्यस्त है, वही मस्त है. सीआरपीएफ से सेवानिवृत्ति के बाद भी उन्होंने काम जारी रखा और नेमानी कार्यालय में १५ वर्षों तक प्रबंधक के रूप में कार्य किया. पत्नी रजनी ने परिवार को बढ़ाने में सेवा की. उनकी सास के अलावा ससुराल पक्ष को भी सहयोग करने का कार्य उन्होंने किया. इतना ही नहीं तो साली का विवाह भी अपने खर्चे से करवाया. बेटा प्रतीक जहां प्राध्यापक के अलावा लाइट डेकोरेशन का काम करता है वही बेटी का भी विवाह हो गया है और वह खुश है. २५ अक्टूबर को उनके जन्मदिन पर सैकड़ो लोगों ने उन्हें शुभकामनाएं दी. उनका कहना है जीवन में सदैव हंसते रहो और हंसाते रहो, यह खुशियों के साथ कब बीत जाएगा इसका पता नहीं चलता. दीपावली पर उन्होंने सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दी.

अपने भक्तों पर सदैव कृपा बरसाते हैं भगवान भोलेनाथ

पूज्य शिव गुरु जी विश्वास को मानते हैं कड़ी

जीवन में प्रभु भोलेनाथ की कृपा जिस भक्त पर बरसती है, उसका जीवन ही धन्य हो जाता है. महादेव भोलेनाथ है और भक्त का भाव देखकर ही कृपा बरसाते हैं. इस आशय का मत उज्जैन के उन्हेल स्थित गोलोक धाम गौशाला के संचालक तथा जाने-माने संत पूज्य शिव गुरु जी महाराज ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान के दीपावली विशेषांक को आशीर्वाद देते हुए गुरुजी ने कहा कि जीवन में अगर हम किसी को सुख नहीं दे सकते हैं तो अगर हमने किसी को दुख भी नहीं दिया तो यह भी सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है. उनके मुताबिक नेक काम में साथ देने वाले भी उतने ही भाग्यशाली होते हैं जितने भाग्यशाली नेक काम करने वाले होते हैं. अमरावती शहर के गंगेश्वर महादेव मंदिर में पिछले दिनों हुई शिव पुराण कथा ने एतिहासिक रिकॉर्ड बनाया. कथा के अलावा गुरु जी की कथाओं में सनातन धर्म की महत्ता, मानव धर्म की श्रेष्ठता, माता-पिता की सेवा तथा गरीबों तथा भूख से परेशान होने वालों की मदद का महत्व देते हैं. देश भर में उनकी कथाएं होती हैं और हजारों की संख्या में भक्ति इसका लाभ उठाते हैं. आत्मीयता तथा प्रेम से लबरेज रहने वाले गुरु जी के चेहरे का तेज जहां भगवान भोलेनाथ की कृपा का बखान करता है वही दूसरी ओर आत्मियता सब प्रेम से परिपूर्ण है. अमरावती में विगत दिनों हुई उनकी तीसरी कथा ने हजारों भक्तों को उनका मुरीद बना दिया. दीपावली को त्याग का पर्व बताते हुए वे कहते हैं कि जीव से शिव हटते

ही हमारा शरीर शव बन जाता है. जो भी नहीं काम करना हो जब तक हमारे शरीर में शिव हैं तब तक करने का प्रयास करना चाहिए. दीपावली की उन्होंने सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी.

श्वेता सुभाषचंद्र चंद्र दुबे

जिंदगी जिंदादिली के साथ जीने का प्रयास करें

आराधना फैशन है लाखों ग्राहकों का चहेता प्रतिष्ठान
हबलानी परिवार है समाजसेवी, धार्मिक परिवार

श्वेता दुबे, ३० अक्तूबर

व्यवसाय के क्षेत्र मेंबादशाहत के साथ ही मानव सेवा,धर्म सेवा,शिक्षा सेवा में अग्रणी परिवार के रूप में हबलानी परिवार का जिक्र किया जाता है. इसके प्रमुख और सेवाभावी व्यक्तित्व पूरणभैया हबलानी जितने सफल व्यवसायी हैं, उससे भी अधिक बेहतरीन संवेदनशील व्यक्ति हैं, जो मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं. वे कहते हैं कि राष्ट्रधर्म से बड़ा धर्म और बेहतरीन कर्म से बड़ा धर्म कार्य नहीं होता है. मानव को मानवता की सेवा के लिए सदैव प्रयास करना चाहिए. इससे दुनिया में प्रेम बढ़ेगा और इससे खुशियां बढ़ेगी. राज्यस्तर पर सुख्यात आराधना फैशन्स को राज्यस्तर का ब्रांड बनाया है. प्रतिष्ठान में तीन पीढ़ियों का संगम जहां दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर ग्राहकों की चाहत को पूरा करने के कारण यह शोरूम तेजी से आसमानी बुलंदी हासिल कर रहा है. हबलानी परिवार व्यवसाय ही नहीं मानवता, समाजसेवी उपक्रमों में भी अग्रणी रहता है. इसके प्रमुख पूरणसेठ के साथ ही सभी भाई, भतीजों के साथ ही पूरा परिवार ही सेवा और व्यवसाय दोनों ही क्षेत्रों

में अग्रणी है.वे कहते हैं कि मेहनत, समर्पण, लगन और काम को छोटा नहीं समझने वाली प्रवृत्ति ही सदैव आगे बढ़ाती है. आज के युवाओं को सबसे अधिक काबिल बताते हैं. साथ ही कहते हैं कि व्यसन से दूर रहने वाले युवक राष्ट्र की सबसे बड़ी सम्पत्ति होते हैं.

आराधना फैशन्स प्रा. लि. न केवल अमरावती जिले बल्कि राज्यस्तर पर वस्त्र व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ा ब्रैंड बन गया है. इसके द्वारा समय समय प र किए जाने वाले विभिन्न उपक्रमों की जहां सराहना की जाती है, वहीं दूसरी ओर ग्राहकों का अपार प्यार भी इसे मिलता है. मानवता की सेवा के साथ सामाजिक सेवा में संचालक पूरणसेठ हबलानी के साथ पूरा हबलानी परिवार लगा रहता है. तीन पीढ़ियों का कुशल संचालन इसे जहां समय से साथ आगे बढ़ाने का काम कर रहा है, वहीं दूसरी ओर सम्पन्नता में भी विनम्रता, संबंधों को निभाने जैसी पूरणभैया की मानसिकता के कारण लाखों मित्र परिवार बनाए हैं. अमरावती प्रापर्टी ब्रोकर्स एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष के साथ ही दर्जनभर से अधिक संगठनों से जुड़े हैं.नेताओं के साथ ही प्रशासन में भी उन्हें सम्मान से देखा जाता है. ग्राहकों को सदैव नया देने का प्रयास जहां आराधना के संचालक

हबलानी बंधुओं द्वारा किया गया, वहीं आज भी ग्राहकों के अपार विश्वास को बरकरार रखने के साथ ही रियायती कीमत में ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े उपलब्ध कराने में उसका कोई सानी नहीं है. संचालक पूरणसेठ हबलानी जितने बेहतरीन व्यवसायी हैं, उतने ही बेहतरीन इन्सान हैं. आराधना फैशन्स प्रा. लि. का उल्लेख किया जाता है. इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात के लगाया जा सकता है कि जिले ही नहीं बल्कि राज्यस्तर से ग्राहक यहां खरीदी करने के लिए आते हैं. इसके संचालक पूरणसेठ हबलानी जितने सफलतम व्यवसायी हैं, उससे भी कई गुना बेहतरीन समाजसेवी तथा नेक काम में योगदान देने वाले व्यक्तित्व हैं. वे सदैव नए से नई डिजाइन के साथ ही प्रसंगानुरूप शानदार स्टॉक रखते हैं. इसलिए वस्त्रों के महाखजाना के रूप में आराधना का उल्लेख किया जाता है. कोरोना महामारी के दौरान ग्राहकों को सहयोग के अलावा ख़रीदी की सही राय देने वाले व्यक्ति हैं. नेकी को जीवन में सर्वाधिक महत्व देने वाले पूरणसेठ हबलानी की सादगी विनम्रता देखकर कोई भी उनसे बिना प्रभावित हुए नहीं रहता है. आराधना की सफलता का पूरा श्रेय ग्राहकों को देते हुए हबलानी परिवार का मानना है कि ग्राहकों का विश्वास ही उनकी सबसे बड़ी पूंजी है. अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े, साड़ी सहित सभी वस्त्र, आधुनिकतम फैशन के साथ आराधना में मिलते हैं.उन्होंने खरीदी का असली आनंद आराधना में उठाने का आग्रह करते हुए सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी.

शत प्रतिशत मतदान का सभी संकल्प लें

पंकज मुद्गल ने दी दीपावली की शुभकामनाएं

अमरावती-इस बार दीपावली की दोहरी खुशियां देशवासियों को मिल रही हैं. महाराष्ट्र में विधानसभा का चुनाव कार्यक्रम भी घोषित हो गया है। नामांकन प्रक्रिया के साथ चुनावी घमासान में सभी दलों के नेता लग गए हैं. नेताओं का भाग्य आम जनता तय करती है. सभी मतदाताओं को अपने मताधिकार का उपयोग करते हुए लोकतंत्र को मजबूत करने में योगदान देना चाहिए. चुनाव में ऐसे उम्मीदवारों को विजई बनाने का प्रयास करना चाहिए जो उच्च शिक्षित हो और विकास के साथ जन समस्याओं को समझते हुए उसका निराकरण करने में भी समर्थ हो।

इस आशा का मत दिव्यांग मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने में सदैव योग देने वाले पंकज मुद्गल ने किया. उनके मुताबिक मतदान को गंभीरता से लेने के लिए सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किया जाता है. मतदान के दिन छुट्टी से लेकर अन्य सभी सुविधा सरकार द्वारा जीत जाती हैं. जिलाधिकारी सौरभ कटिहार द्वारा मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिए जी जान से प्रयास किया जा रहा है. लोकसभा चुनाव में यद्यपि मतदान का प्रतिशत बड़ा लेकिन विधानसभा चुनाव में अमरावती में सभी मतदाताओं को मतदान करते हुए इस जिले का नाम सर्वाधिक मतदान के रिकॉर्ड के रूप में समूचे विश्व में गौरवान्वित करना चाहिए. मतदान हमारा अधिकार ही नहीं बल्कि लोकतंत्र को मजबूत करने का और सरकार में जनता की भागीदारी निश्चित करने का महत्वपूर्ण मौका होता है. पंकज मुद्गल ने सभी मतदाताओं से मतदान का संकल्प करने के साथ ही अन्य को भी मतदान के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया. यह भी एक प्रकार से राष्ट्र सेवा होने की बात कही. अंत में उन्होंने सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी.

सेवा, समर्पण और त्याग के संगम हैं

आत्मीयता से ओतप्रोत दंपति से मिलकर मिलती है प्रेरणा

जीवन में बहुत कम लोगों के नसीब में भाग्यशाली होने का मौका मिलता है. मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूं कि जिसकी मुंह बोली बहन गौरी अय्यर जहां सेवा समर्पण और प्रेम की मूरत हैं वहीं दूसरी ओर आदर्श पत्नी के रूप में उनका जितना बखान किया जाए वह कम है. शिवराम गणेश अय्यर जितने भोले हैं उतने ही प्रेरणादाई व्यक्तित्व हैं. आत्मीयता और प्रेम तो इस दंपति में इस कदर कूट-कूट कर भरा है कि उनका कुछ समय तक सानिध्य भी खुशी एवं जीवन जीने की प्रेरणा देता है. आज दांपत्य जीवन के तनाव के कारण कई बार घर तथा परिवार में क्लेश का वातावरण रहता है. लेकिन ऊपर वाले ने भी इन दोनों की क्या खूब जोड़ी बनाई है जो एक दूसरे के प्रति प्रेम का अथाह सागर रखते हैं. दीदी का स्वभाव जहां तीव्र है वहीं दूसरी ओर गणेश जी संयम और संभालने का काम करते हैं. दीदी की गुस्सा भी यद्यपि पति की अच्छाई के लिए रहती है लेकिन उनका सादापन इतना है कि स्वयं के भी चिंता नहीं करते हैं. इन दोनों का प्रेम अमर प्रेम कहना गलत नहीं होगा. आज के दौर में जब नाते रिश्ते स्वार्थ से परिपूर्ण हो गए हैं ऐसे दौर में इन दोनों का प्रेम निश्चित ही आज के युवाओं के लिए किसी प्रेरणा से काम नहीं है. सामाजिक, धार्मिक के साथ किसी जरूरतमंद की मदद के लिए जहां अभी तक पर रहते हैं वहीं उनका मन जैसा प्रेम प्रकार कोई भी स्वयं को धन्य मान सकता है. स्वास्थ्य को लेकर सदैव परेशान रहने के बावजूद भी दोनों के चेहरे की खुशी और प्रेरणादाई विचार हजारों लोगों को प्रेरणा देते हैं. दीदी को बिल्कुल दिखाई नहीं देता है लेकिन पति कि उनके द्वारा की जा रही सेवा निश्चित तौर पर लाखों महिलाओं के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं है. प्रभु गोविंदा के चरणों में मैं यही कामना करूंगा कि यह दंपति स्वस्थ रहे और मुझे जैसे हजारों लोगों को प्रेरणा देने का कार्य करें. दोनों ने दीपावली के पावन पर पर समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं दी है. आप दोनों का यह प्रेम इसी तरह सदैव बढ़ता रहे और कल्पना दीदी का सदैव साथ रहे, प्रभु चरणों में यही कामना.

विदर्भ स्वाभिमान डेस्क

मानव सेवी, मददगार व्यक्ति हैं डॉ.डी.जी.आडवाणी

जीवन में कुछ लोगों का स्वभाव हमेशा प्रभाव डालता है. ऐसे ही लोगों में शामिल हैं राष्ट्रीय स्तर के दंत शल्य चिकित्सक डॉ. द्वारकादास जी.आडवाणी. पिछले २० वर्षों से उनसे करीबी परिचय रहने के बाद उनके स्वभाव और उनके मानव धर्म प्रेम को समझने का मौका मिला. तमाम ऊंचाइयां हासिल करने के बाद भी उनका अपनापन और विनम्रता किसी को भी बिना प्रभावित किया नहीं रहती है. आज वे जहां सिंधी समाज में सबसे आदरणीय व्यक्ति हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक और धार्मिक कामों में उनका योगदान अन्य को प्रेरित करता है.

विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत में उन्होंने कहा कि इंसान को केवल अपने लिए ही नहीं जीना चाहिए. बड़े भाग्य से हमें मानव का जन्म मिला है, ऐसे में हमसे जितना संभव हो उतना अच्छा करते हुए अन्यों को भी प्रेरित करने का काम करने का प्रयास करना चाहिए. जितने बेहतरीन डॉक्टर हैं उससे भी कई ना अधिक बेहतरीन इंसान होने के नाते उन्होंने लाखों मित्र तैयार किए हैं. उनकी आत्मीयता और अपनापन किसी को भी प्रभावित किए बगैर नहीं रहता है. वह कहते हैं कि हम अगर जीवन में किसी को हंसा नहीं सकते हैं तो किसी को भला कर बद्दुआ भी नहीं लेनी चाहिए. जीवन में सत्कर्म को वे जहां महत्व देते हैं वहीं उनका मानना है कि बचपन का आदर्श संस्कार जीवन को सदैव प्रभावित करता है. माता-पिता की सेवा को सर्वोच्च सेवा मानने वाले डॉक्टर आडवाणी स्वयं माता-पिता के भक्त हैं. राष्ट्र धर्म और संयुक्त परिवार को भी वरदान मानते हैं. प्रेम और स्वभाव ही हमेशा सदैव अमर बनता है ऐसे में वे सदैव इसे बाटते रहने का संदेश देते हैं. जिसकी अपनों से नहीं जमती है उसकी किसी से भी नहीं जमती. शरीर से बड़ा धन नहीं है ऐसे में सभी को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की सलाह देते हैं. समस्त देशवासियों को दीपावली के पावन पर्व की शुभकामनाएं भी उन्होंने दी.

सेवा भक्ति भाव और सामाजिक कार्यों के प्रेरणा स्रोत हैं लप्पी भैया जाजोदिया

प्रकाश राजपाल

अमरावती शहर में धनवानों की कमी नहीं है लेकिन इनमें समाजसेवी चंद्रकुमार उर्फ लप्पी भैया जाजोदिया ऐसे व्यक्ति हैं जो न केवल अमरावती शहर बल्कि समूचे जिले तथा राष्ट्रीय स्तर पर सेवा कार्यों के लिए जाने जाते हैं. भैया की महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन में जहां हजारों लोगों के जीवन को संवारा है, वहीं कई ऐसे लोगों को भी सत्ता के शीर्ष पर पहुंचाने का कार्य किया है. आज अमरावती शहर का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां उनका नाम सम्मान से नहीं लिया जाता है. संपन्नता में भी विनम्रता की वे जहां प्रतिमूर्ति हैं वहीं दूसरी ओर माता-पिता के अनन्य भक्त हैं. विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत में उन्होंने कहा कि जीवन में संस्कार तथा माता-पिता की सेवा जैसा मौका केवल और केवल इंसान को ही मिलता है. जो इंसान स्वभाव से अच्छा है उसका प्रभाव हर स्थान पर पड़े बगैर नहीं रहता है. राज्य में १०८ श्रीमद् भागवत कथाएं पूरी करने का संकल्प लिया है. जिसमें से ६० के करीब तक पहुंच रही हैं.

राज्य स्तर पर युवाओं को संस्कारित करने और व्यसन से मुक्त करने के लिए उन्होंने स्वयं के खर्चे से १०८ श्रीमद् भागवत कथाओं का संकल्प लिया है. उनकी कथनी और करनी में कभी अंतर नहीं रहता है. आज अमरावती में लाखों लोग जहां उनका अपार सम्मान देते हैं वहीं सर्वधर्म समभाव को जीवन का सूत्र मानने वाले भैया कहते हैं कि मानवता से बड़ी सेवा और संयुक्त परिवार जैसी खुशी कहीं नहीं मिल सकती है. पत्नी अनिता जाजोदिया जीवन संगिनी के रूप में जहां पति का गौरव बढ़ा रही हैं, वहीं दोनों ही बेटे पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए व्यवसाय के क्षेत्र में अग्रणी है. युवाओं में बढ़ती व्यसनाधीनता को वे गंभीर मानते हैं. उनका कहना है कि भारत युवाओं का देश है. युवा पीढ़ी हमारे असली ताकत है. यह अगर व्यसन के चक्कर में फंस जाते हैं तो निश्चित तौर पर इसकी तकलीफ पूरे परिवार को उठानी पड़ती है. दीपावली पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए. उन्होंने कहा कि जीवन में स्वास्थ्य का सबसे अधिक महत्व है. अगर हमारा शरीर ठीक नहीं है तो धन दौलत का कोई उपयोग नहीं हो पता है. पतंजलि योगपीठ के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार भैया की दिनचर्या सुबह व्यायाम और प्राणायाम से शु डिग्री होती है. उनके चेहरे का तेज बताता है कि स्वास्थ्य के मामले में कितनी गंभीर हैं. किसी विधायक या सांसद के यहां जितनी भीड़ नहीं रहती है उससे अधिक भीड़ शारदा नगर स्थित भैया के निवास पर सदैव रहती है. आने वाले हर व्यक्ति के साथ विनम्रता वाला व्यवहार और नर को ही नारायण मानने वाली उनकी आत्मीयता देखकर एक बार उनसे मिलने वाला सदैव उनका हो जाता है. राष्ट्र धर्म को सबसे बड़ा धर्म मानने वाले लप्पी भैया लाखों लोगों के दिलों में रहते हैं. उनके स्वभाव की विनम्रता किसी को भी बिना प्रभावित किए नहीं रहती है. वे स्वस्थ रहें मस्त रहें प्रभु चरणों में यही कामना.दीपावली की उन्होंने सभी को शुभकामनाएं दी.

मित्रता के गौरव हैं प्रा.डॉ.अजय बोंडे

विदर्भ स्वाभिमान, उम्दा व्यक्तित्व

स्वार्थ भरी इस दुनिया में रिश्तो को समझने वाले और उसे पूरी ईमानदारी से निभाने वाले लोगों की संख्या तेजी से घट रही है लेकिन प्रा.डॉ.अजय बोंडे ऐसे मित्र हैं जिनकी मित्रता पर गर्व किया जा सकता है. सीधे-साधे और बचपन से ही देसी खेलों के खिलाड़ी रहे और खो-खो में अमरावती विद्यापीठ के कप्तान रहे डॉ. अजय बोंडे जितने शानदार मित्र हैं उतने ही सामाजिक कार्यों में अग्रणी व्यक्ति हैं. उनका कहना है कि जीवन में जब भी अपने से कमजोर लोगों की मदद की बारी आए तो इसका तुरंत लाभ लेना चाहिए. प्रभु सेवा का भाग्य उसे ही देते हैं जिसे वे इसके लायक समझते हैं. किसी पीड़ित की सेवा करने पर सुकून के साथ ही हम वह कमाई कर लेते हैं, जो करोड़ों रूपए की दौलत के बराबर होती है. वह जीवनभर आपको नहीं भूलता है.

उच्च विद्या विभूषित डॉ. अजय बोंडे बहुगुणी व्यक्ति हैं. उनके प्रेम, स्वभाव और विनम्रता से हजारों मित्र परिवार तैयार किए हैं. जीवन संगिनी सौ. हर्षा बोंडे के अलावा बेटा ओम भी माता-पिता के आदर्श विचारों पर चलते हुए पुणे में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है. संयुक्त परिवार को जरूरी मानते हैं और छोटे भाई के साथ ही परिवार के बीच अपार प्रेम देखकर कोई भी प्रसन्न हुए बगैर नहीं रहता है. बचपन से ही भावुक रहने वाले अजय भाई संबंधों को जिस तरीके से निभाते हैं, आज के दौर में वह कठिन है. स्वार्थ के कारण जहां प्रभावित हो रहे हैं वही मित्रों के लिए सदैव भागने वाले आदर्श मित्र के रूप में अजय बोंडे ने लाखों मित्र तैयार किया है. खेल के अलावा गरीब छात्रों को मार्गदर्शन और १०वीं और १२वीं में मेरिट सूची में आने वाले छात्रों के घर पर जाकर सत्कार करना और उन्हें हिम्मत देने का कार्य पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं। जीवन में माता-पिता को कामयाबी का पूरा श्रेय देते हुए वे कहते हैं कि संयुक्त परिवार की खुशी हमेशा अपार रहती है. दीपावली के पावन पर पर उन्होंने समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं.

बुजुर्गों की सेवा मानते हैं ईश्वर सेवा

पुराने चावल के सदस्य बांट रहे खुशियां

तारीख १५ अगस्त, २०२२ को हमारा सम्पूर्ण राष्ट्र तिरंगा लहराकर स्वतंत्रता दिवस मना रहा था, और यहीं औचित्त साधकर न्यायिक विभाग से सेवानिवृत्त चंद कर्मचारियोंने, अपने नजरों में कुछ सामाजिक उद्दिष्ट रखकर पुराने चाँवल ग्रुप की स्थापना की ।

समाजसेवा का सर्वोच्च भाव, यही है पुराने चाँवल ग्रुप की विशेषता और खूबी... न्यायालयीन सेवानिवृत कर्मचारियों की सराहनीय फसल अपने लिए जिए तो क्या जिए का गाना फिल्मों में काफी लोकप्रिय हुआ है... यह जितना सुंदर गीत है उतना ही बड़ा संदेश भी हर मानव को देता है... खुद के लिए जीने वाला केवल जानवर होता है लेकिन इंसान ही ऐसा होता है जो स्वयं के साथ दूसरों का जीवन सवारने का कार्य करता है... न्यायालय में सेवा बतौर कर्मचारी कार्यरत रहते समय, इच्छा होकर भी मानवता की सेवा करने का मौका और समय नहीं मिलने का मलाल रहने से, मानव सेवा का भाव लिए सेवानिवृत्त न्यायालयीन कर्मचारियों द्वारा पुराने चाँवल नामक संगठन का गठन किया गया... इसके संस्थापक चंद्रकांत कमाविस्दार, वल्लभ पेठकर, दीपेंद्र मिश्रा, नितिन राजपूत, चंदू काळे, विजय जयस्वाल, पप्पू फुकटे तथा अन्य ग्रुप सदस्यों द्वारा संगठन का गठन कर जिन लोगों को सचमुच प्रेम, आत्मीयता की जरूरत होती है ऐसे निराधार और अपनों के द्वारा ठुकराए गए बुजुर्गों की सेवा, दिव्यांग सेवा तथा जरूरतमंदों निशुल्क सेवा देने के लिए पुराने चाँवल संगठन सदैव सक्रिय रहता है... ग्रुप का मानना है की, जीवन में सदैव खुशियां और प्रेम बांटने से ही शांति और समाधान की प्राप्ति होती है, इसलिए संगठन इसी नीति पर काम करता है... राजुरा-मासोद के करीब स्थित अमरावती नहीं तो समूचे राज्य में अपनेआप में मिसाल पेश करने वाले अद्वितीय ज्ञानशांती उपवन इस सीनिअर सिटीजन होम में ग्रुप के महानुभाव दीपेंद्र मिश्राजी के प्रयासों से संपूर्ण पुराने चांवल ग्रुप ने २४ ह्न ७ अपनी अवीरत निशुल्क सेवा देने का संकल्प किया है...

ग्रुप ने ज्ञानशांती उपवन में मान्यवर वृद्धों संग १५ अगस्त को ध्वजारोहण कर हर्षोल्हास से स्वतंत्रता दिवस मनाया, तथा उनके साथ सामूहिक भोज कर राष्ट्रीय तोहार मनाया...

उसी प्रकार शरद पौर्णिमा का औचित्य साधकर वृद्ध बुजुर्गों संग पारंपारिक सामूहिक दूध सेवन किया, साथ में गीत संगीत का बहारदार कार्यक्रम सादर कर, उपवन के सभी बुजुर्गोंको अपनेपन का एहसास कराया... खुशियां बांटनेवाले ऐसे सेवाभावी और रंगारंग कार्यक्रम पेश करने के लिए संगठन की जितनी सराहना की जाए, वह कम है... आज के दौर में जब सगे-संबंधी, रिश्ते-नाते एकदूसरे से दूर हो रहे हैं, ऐसे दौर में जीवन के अंतिम पडाव पर पहुंचे बुजुर्गों के लिए संगठन का यह कार्य न केवल सराहनीय बल्कि

अभिनंदनीय भी है... विदर्भ स्वाभिमान परिवार कामना करता है कि संगठन का मानवता जीवित रखने का यह समाजसेवी कार्य लगातार बढ़ता रहे और इस संगठन से सैंकड़ों-हजारों की तादाद में लोग जुड़े और जीवन में केवल खुद के लिए नहीं बल्कि जितना संभव हो उतना, अन्यों के लिए जीने और खुशियां देने का कार्य करें... दीपेंद्र मिश्राजी, सुश्री मीना मिश्रा और उनके निकटतम पहले से ही सेवाभावी परिवार के हैसियत से जाने जाते है... सीनिअर सिटीजन होम में उनकी स्वयंसेवा और सदैव उपवन से जुड़े रहने की महत्वकांक्षा सभी को प्रभावित करती है...

पुराने चाँवल ग्रुप की एक विशेषता यह भी है की, यह ग्रुप पुरुषों का होकर भी प्रत्येक कार्यक्रम में सिर्फ और सिर्फ महिलाओं को महत्व देकर स्वयं से ऊंचाई पर सोचता है, देखता है और रखता भी है...

दो वर्ष पूर्व केवल चार मित्रपरिवारों ने लगाया हुआ पुराने चाँवल ग्रुप का यह पौधा आज ३६ परिवारों का हराभरा लहलहाता वृक्ष बनकर अपने यौवन पर लहराते हुए अपनी समाजसेवा बरकरार रखने में सक्षम बना है...

दीपावली पर समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं... सभी स्वस्थ रहें, मस्त रहें प्रभु चरणों में यही कामना....

सौ.वीना सुभाषचंद्र दुबे
प्रबंधक, विदर्भ स्वाभिमान

बुजुर्गों को परिवार का एहसास कराता ज्ञान शांति उपवन

आदर्श कोठारी परिवार की सराहनीय पहल

जीवन में बचपन और बुढ़ापा एक जैसा होता है. यही कारण है कि इन दोनों ही समय आत्मीयता और प्रेम की अत्यधिक जरूरत होती है. आज के दौर में स्वार्थ में बदलते रिश्तों के कारण परिवार की खुशियां भी कहीं ना कहीं प्रभावित होती हैं. इसकी सबसे अधिक मार बुजुर्गों पर पड़ती है. बचपन तो संभालने के लिए मां और पिता होते हैं लेकिन आमतौर पर बुढ़ापे में जब अपनों द्वारा ही माता-पिता को ठुकराया जाता है तो इसका माता-पिता को कितना दुख होता है इसका अंदाजा केवल वही लगा सकते हैं. इस सामाजिक कमी को समझने और उसका उपाय ढूंढने का प्रयास शहर के जाने-माने व्यवसाय और समाजसेवी कोठारी परिवार ने किया है. केएल कॉलेज के पूर्व प्राचार्य ज्ञानचंद कोठारी और उनकी धर्मपत्नी शांति बाई कोठारी के आदर्श मार्गदर्शन में उनके बेटे आलोक कोठारी ने अपनों द्वारा ठुकराए गए माता-पिता के लिए मासोद के करीब ज्ञान शांति उपवन के माध्यम से खुशियां बांटने का न केवल संकल्प लिया बल्कि आज यह वृद्ध आश्रम बुजुर्गों को खुशियां देने का सबसे बड़ा केंद्र बन गया है.

कोठारी परिवार का सामाजिक कार्य केवल इतनी तक ही सीमित नहीं है. बातचीत में शांति बाई कोठारी बताती है कि बचपन में माता-पिता अगर हमारे सभी जरूरतों को पूरी करते हैं और हमारे आदर्श पालक बनते हैं, ऐसे में बुढ़ापे में अगर माता-पिता की उम्र का लिहाज करते हुए बेटा और बहू उनके लिए माता-पिता की भूमिका निभाई तो किसी भी बुजुर्ग माता-पिता को कभी वृद्ध आश्रम में जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी. स्वार्थ भरी इस दुनिया में जब कोई औलाद अपने माता-पिता को वृद्ध आश्रम में भेजती है तो उसका दर्द दूसरा कोई नहीं समझ सकता. ज्ञान शांति उपवन बुजुर्गों की सेवा के साथ यहां के कर्मचारियों द्वारा जिस आत्मीयता से उनकी सेवा की जाती है, हर बुजुर्ग से भोजन करने से लेकर अन्य जरूरत का ध्यान रखा जाता है किसके लिए सचमुच प्रबंधन के साथ ही यहां के कर्मचारियों की भी सराहना की जानी चाहिए. यह ओल्ड एज होम नहीं बल्कि बुजुर्गों को खुशियां बांटने का केंद्र बन गया है. इसके लिए कोठारी परिवार का जितना अभिनंदन किया जाए उतना कम है. अमरावती में पैसे वालों की कमी नहीं है लेकिन यह पैसे बढ़ाने की मानसिकता में सदैव रहने वालों की भीड़ में ऐसे लोग भी हैं यह भी अमरावतीवासियो का भाग्य ही है. यहां पर हर पर्व मनाया जाता है और यहां रहने वाले सभी बुजुर्गों को परिवार की खुशियों की अनुभूति कराने का सदैव प्रयास होता है. कलयुग के दौर में धन्य है वह बेटा जिसने अपने माता-पिता की भावना को साकार करने के लिए यह शानदार तोहफा अमरावती वासियो को दिया है. प्रभु चरणों में हम यही कामना करेंगे की कोठारी परिवार उत्तरोत्तर प्रगति करें और मानवता की सेवा का भाव सदैव उनमें बना रहे, स्वस्थ रहें, मस्त रहें और निराधार बुजुर्गों की सेवा का पुण्य सदैव मिलता रहे.

– राजेश दुबे

राष्ट्रधर्म है सबसे पहली प्राथमिकता

राष्ट्रधर्म से बड़ा धर्म नहीं है. राष्ट्र सुरक्षित रहने पर ही हर नागरिक तरक्की कर सकता है. लेकिन जब राष्ट्र ही सुरक्षित नहीं रहेगा तो कोई भी सुरक्षित नहीं रह सकता है. इस आशय का मत सुख्यात व्यवसायी, श्रद्धा मेडिकल के संचालक मनोज डफले ने किया. दीपावली को त्याग और खुशियों का पर्व बताते हुए इसे सभी को बांटने और खुद खुश रहकर सभी को खुश रखने का संदेश दिया.

अमरावती केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्ट एसोसिएशन के जिला उपाध्यक्ष मनोज डफळे जितने बेहतरीन व्यवसायी हैं, उससे भी बेहतरीन इन्सान हैं. गरीब बेटियों, जरूरतमंदों की मदद करते हैं. बढ़ते तनाव के कारण दुनियाभर की बीमारियों ने लोगों को घेर लिया है. इसका कारण केवल दिल साफ नहीं रखना ही है.वे

मनोज डफले ने कहा, खुशियां बांटते रहें, कम नहीं होंगी

कहते हैं कि लोगों में स्वार्थ अधिक होने से खुशी गायब हो रही है.

किसी गरीब किसान, परिवार की मदद के मामले में सदैव अग्रणी रहते हैं.सेवाभावी व्यवसायी मनोजभाऊ डफळे मुताबिक खुशियां बाटने से बढ़ती हैं. इसके साथ ही जिसमें इंसानियत, दूसरे की भावनाओं की कद्र करने की खूबी होती है, वह व्यक्ति जीवन में कभी भी किसी भी क्षेत्र में असफल नहीं हो सकता है.मानवता सेवी रहने के साथ ही माता-पिता को जीवन में अत्याधिक महत्व देते हैं. सफलता में पत्नी सौ. रश्मी का सदैव साथ रहने की बात कहते है. वे कहते हैं कि हम जिस भी क्षेत्र में हैं, ईमानदारी से काम करना चाहिए, उससे मन प्रसन्न रहता है. किसी को धोखा नहीं देते हुए खुशियां देने का प्रयास करना चाहिए. दीपावली पर उन्होंने सभी को मंगलमय शुभकामनाएं दी.

शक्ति,भक्ति और सेवा के संगम हैं पीठाधीश्वर १००८ शक्ति महाराज

जनसेवा को मानते हैं बड़ा धर्म

बचपन से ही भक्ति भाव और समाज सेवा को अपना लक्ष्य निर्धारित करते हुए राष्ट्र धर्म को सबसे अधिक महत्व देने वाले पीठाधीश्वर १००८ शक्ति महाराज न केवल अमरावती बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से अपना स्थान बना रहे हैं. महाकाली माता के अनन्य उपासक शक्ति महाराज बचपन से ही धर्म और राष्ट्र धर्म को महत्व देते हैं. जिस हिंदू श्मशान के पीछे किसी समय जाने से भी लोग डरते थे, वहां महाकाली माता मंदिर बनाकर और मां की सेवा के बलबूते जंगल में भी मंगल करने का श्रेय पूज्य शक्ति महाराज को जाता है. उनका कहना है कि दिल से किया गया कोई भी कार्य कभी असफल नहीं होता है.

अमरावती में कई वर्षों तक गरीब बेटियों का अक्षय तृतीया के दिन सामूहिक विवाह करवाने वाले शक्ति महाराज सामाजिक कामों, गौमाता की रक्षा, शहर में अवैध धंधों के खिलाफ, गंदगी के खिलाफ सदैव आक्रामक रहते हैं. उनका कहना है कि मानवता की सेवा से बड़ी दूसरी सेवा नहीं है. गौ माता को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करने और इन पर अत्याचार करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने की न केवल मांग की बल्कि स्वयं सड़क पर उतरकर तस्करी का पर्दाफाश करते हुए अभी तक सैकड़ो गौ माता को जीवन दान देने का कार्य किया. इसके लिए उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस से लेकर कई केन्द्रीय मंत्रियों से भी मिले और अभियान चलाया. अमरावती शहर के अवैध धंधों के खिलाफ उनके द्वारा छेड़े गए अभियान के चलते पुलिस को कार्रवाई करने के लिए मजबूर होना पड़ा. गौ माता की सेवा को पुण्य का कार्य मानने वाले शक्ति महाराज का कहना है कि राजनीति में अच्छे लोगों की जरूरत है. अपनी राजनीतिक पार्टी क्रांति दल के माध्यम से आगामी महानगरपालिका चुनाव में उम्मीदवार उतारने का संकेत देते हुए उन्होंने कहा कि अब राजनीति में अच्छे लोगों की अत्यधिक जरूरत आन पड़ी है. दीपावली को त्याग और समर्पण का त्यौहार बताते हुए महाराज श्री ने कहा कि जिस तरह दीपक स्वयं जलते हुए अन्यों को रोशनी देता है इस तरह मानव को मानव के काम में सदैव आना चाहिए. राष्ट्र धर्म को सबसे बड़ा धर्म बताते हुए वे कहते हैं कि अगर राष्ट्र सुरक्षित है तो हम सभी सुरक्षित हैं अन्यथा बांग्लादेश जैसी स्थिति अगर हो जाए तो धन दौलत सब बेकार जाती है. जब हम ही सुरक्षित नहीं रहेंगे तो फिर धन दौलत कहां से सुरक्षित रहेगी. हिंदू एकता की जरूरत जताते हुए कहते हैं कि अगर हम बंटेंगे तो हमारा कटना निश्चित है. सनातन धर्म को मानवता तथा विश्व प्रेम को प्रोत्साहित करने वाला धर्म बताते हुए उन्होंने कहा कि सभी सनातनियों को राष्ट्र की सुरक्षा के लिए एक जुट होकर एकता का संकल्प लेना चाहिए. अंत में उन्होंने समस्त देशवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी और मां महाकाली के चरणों में कामना की की सभी सुखी रहें.

उद्यम और उद्यमियों को बढ़ावा देती है जिजाऊ बैंक

साक्षात्कार इंजीनियर अविनाश कोठाले

अमरावती-बिना सहकार नहीं उद्धार का जिक्र करते हुए जिजाऊ कमर्शियल कोऑपरेटिव बैंक के संस्थापक अध्यक्ष और सहकारिता क्षेत्र का गहन अनुभव रखने वाले अभियंता अविनाश कोठाले के मुताबिक नौकरियों की घटती संख्या को देखते हुए युवाओं को उद्योग व्यवसाय के क्षेत्र में आगे आना चाहिए. ऐसे युवाओं को प्रोत्साहित करने का कार्य बैंक द्वारा किया जा रहा है. केंद्र सरकार की उद्योग को बढ़ावा देने वाली विभिन्न नीतियों का जिक्र करते हुए इसका लाभ लेते हुए स्वयं भी रोजगार होने और अन्यों को रोजगार देने लायक बनने की जरूरत जताई. विदर्भ स्वाभिमान के देश के सबसे बड़े दीपावली विशेषांक को अपनी शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि इस समाचार पत्र ने सदैव मानव सेवा और राष्ट्र धर्म को प्राथमिकता दी है. सहकारिता क्षेत्र में विश्वसनीय और छोटी की बैंक समझे जाने वाली जिजाऊ बैंक अपने ग्राहकों को ही सब कुछ समझती है और उनकी जरूरत के मुताबिक सेवा देने के लिए तत्पर रहती है. ग्राहकों के विश्वास को उन्होंने बैंक की सबसे बड़ी कामयाबी बताते हुए भविष्य में महाराष्ट्र राज्य के अलावा अन्य स्थानों पर भी बैंक की शाखा खोलने और ग्राहकों को सेवा देने का प्रयास शु डिग्री रहने की जानकारी दी. बैंक का कामकाज पारदर्शी रहता है तथा समय के साथ ही बैंक द्वारा बेहतरीन सुविधाएं देने का प्रयास किया जाता है. उनके मुताबिक भारत युवाओं का देश है और युवाओं में ही अगर मेहनत तथा लगन की तैयारी हो तो उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं रहता है. महिलाओं के साथ सभी वर्गों का कल्याण बैंक की प्राथमिकता होने की जानकारी देते हुए महिलाओं के लिए भी बैंक की कई योजनाएं रहने की जानकारी दी. इसका लाभ महिलाओं से लेने का अनुरोध भी किया. अंत में दीपावली की सभी देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए सभी के सुखमय और स्वस्थ जीवन की कामना की.उनके नेतृत्व में सभी संचालक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी नितिन वानखडे तथा सभी अधिकारी-कर्मचारी बैंक को प्रगति की राह पर ले जाने तथा ग्राहकों को बेहतरीन सुविधाएं देने का प्रयास कर रहे हैं. दीपावली पर सभी को शुभकामनाएं दी. साथ ही कामना की कि सभी का जीवन खुशियों से भरा रहे.

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

धौरहरा निवासी एवं शिक्षक पंडित राम प्रसाद दुबे की धर्मपत्नी श्रीमती द्रौपदी दुबे का 1 नवंबर को स्वर्गवास हो गया. भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उन्हें अपने चरणों में स्थान दें, उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि.धौरहरा निवासी एवं शिक्षक पंडित राम प्रसाद दुबे की धर्मपत्नी श्रीमती द्रौपदी दुबे का 1 नवंबर को स्वर्गवास हो गया. भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उन्हें अपने चरणों में स्थान दें, उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि.

-शोकाकुल-

राधेश्याम दुबे, राजेंद्र प्रसाद, जगदीश प्रसाद, ज्ञान प्रकाश, सुभाष चंद्र, सत्य प्रकाश, राजेश कुमार, सर्वेश कुमार, सुनील कुमार, अनिल कुमार, हर्षित, अर्पित, प्रियांशु, डॉ संदीप दुबे, मनोज दुबे,आदित्य दुबे तथा समस्त दुबे परिवार, धौरहरा,तहसील पट्टी,जिला प्रतापगढ़.

भ: महावीर के १५० प्र. उ:

१) भगवान महावीर कौनथे ? /–अंतिम तीर्थकर थे (२४ वे ती:)

२) भं. महावीर ने किस भव में सम्यक्त्व प्राप्त किया ?/– नयसार के भव में

३) भ.महावीरनेकिसभवमें तीर्थकर नाम का उपार्जन करा था? /– नंदन के भवमें

४) भ. महावीर ने किस भव में नीच गोत्र का बंध करा था ?/– मरीचि के भवमें

५) भ.महावीरकेकितने भवोंकी गिनती है? /– २७ भवों की

६) भ.महावीरकिस गाव के रहने वाले थे? /– कूंडलपुर गाव के

७) भ.महावीरके माता–पिता का नाम क्या था? /– माता – त्रिशला / पिता – सिद्धार्थ।

८) भ. महावीर के भाई–बहन का नाम क्या था ? /– भाई–नंदिव न / बहन – सुदर्शना।

९) भ.महावीरकीपत्नीकानामक्याथा? /– यशोदा

१०) भ. महावीर के जवाई–बेटी का नाम क्या था ? /– जवाई–जमाली/बेटी–प्रियदर्शना

११) भ.महावीर केसास–ससुर का नाम क्या था? /– सास–धारणी/ ससुर–समरवीर

१२) भ. महावीर की दोयती का नाम क्या था? /– शेषमती

१३) भ. महावीरके काका का नाम क्या था? /– सुपार्श्व

१४) भ. महावीर केपहले गर्भ के माता–पिता का नाम क्या था? /– देवानन्दा–क्रषभदत्त

१५) भ. महावीर ने दीक्षा पूर्व कोई धर्म उपदेश दिया था? /– नहीं दिया ।

१६) भ.महावीरने दीक्षाकिसके साथली? /–अकेलेलीथी ।

१७) भ. महावीर ने किससे दीक्षा ली ? /– अपने आपली थी ।

१८) भ. महावीर ने किस उम्र मे दीक्षाली थी? /– ३० वर्षमें

१९) भ. महावीर दीक्षा लो ऐसा किसने आकर कहा ? /– लोकान्तिक देवो ने । ३

२०) भ. महावीर ने दीक्षा पूर्व कौनसा तप करा था? /– नहीं करा था।

२१) भ. महावीर ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षाली थी ? /– अशोक वृक्ष

२२) भ. महावीर का रंग कौनसा था ? /– पीला रंग रा

२३) भ. महावीर का चिन्ह (लक्षण) क्या था? /– सिंह

२४) भ. महावीर का गोत्र क्या था ? /– काष्यप गोत्र उ

२५) भ. महावीर दीक्षा पूर्व सामाईक प्रतिक्रमण करते थे? /– नहीं करते थे

२६) भ. महावीर ने कितने वर्ष राज्यकिया था? /– नहींकरा था

२७) भ. महावीरके प्रथम उपदेश से कितनो ने बोध लिया था ? /– किर ने नहीं

२८) भ. महावीर ने घाती कर्म काक्षय कब करा था ? /– केवल्य होते ही उनके ४२ वर्ष में वैशा: सु: दसम

२९) भ.महावीरने अघाती कर्म काक्षय कबं करा था ?/– निर्वाण होते ही ७२ वर्ष में कार्तिक वदी अमावस

३०) भ. महावीर ब्रिशला का कुक्षी में कितने दिन तक रहे थे? /– ६ महिने १५ दिन तक

३१) भ. महावीर ने कितने प्रकार का धर्म बताया था? /– अगार धर्म – अणगार धर्म

३२) भ. महावीर के शासन काल में अमारी घोषणा किसने की थी ? /– कुमारपालराजाने (भ: के समय अभयकुमार नी)

३३) भं. महावीर ने प्रथम तप कौनसा करा व पारणा किससे करा ? /– बेला – खीरसे

बहुगुणी,सेवाभावी व्यक्ति हैं डॉ. राजेन्द्र नवाथे

भजनें सुनकर लोग झूमते हैं, मानवता सेवा को देते हैं महत्व

डॉ. राजेन्द्र नवाथे सफलतम व्यवसायी, सुख्यात भजन गायक के साथ ही धार्मिक कामों में अग्रणी रहने वाले व्यक्ति हैं. गरीब मरीजों की मदद राजलक्ष्मी मेडिकल के माध्यम से सदैव जहां करते हैं, वहीं परमार्थ को जीवन का आदर्श मानते हैं. वे कहते हैं कि हर इन्सान को जितना संभव हो, अपने से कमजोर की मदद करनी चाहिए. सभी भारतीयों को मेहनती, लगन और समर्पण से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आग्रह करते हैं. जीवन को जो व्यक्ति प्रभु का उपहार मानते हुए उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहता है, उस व्यक्ति की कठिन से कठिन चुनौती भी सरलता से पार हो जाती है.मेडिकल से लेकर श्री विट्ठल–रूक्मिणी मंदिर नवाथे प्लॉट तथा हनुमान मंदिर श्रीकृष्णार्पण कॉलोनी के संचालन तक में कामयाब हैं. भजन गायक के साथ ही संगीत वाद्य बजाने वाले राजेन्द्र नवाथे कहते हैं कि प्रभु के स्मरण से प्रेरणा और हिम्मत मिलती है. मन प्रसन्न रहता है.

ज़ीवन में सकारात्मक सोच का आपकी और परिवार की प्रगति से गहरा संबंध रहता है. जब हम सभी के बारे में अच्छा सोचते हैं तो प्रभु हमारा भी सदैव अच्छा करते हैं. इसलिए कभी किसी के बारे मेंबुरी भावना मन में नहीं लानी चाहिए. ऐसा करने में अगर हम सफल होते हैं तो दुनिया में कोई भी ताकत हमारी प्रगति को रोक नहीं सकती है. इसलिए हर व्यक्ति को सकारात्मक सोच के साथ काम करना चाहिए. इसमें निश्चित ही सफलता मिलेगी. परिवार की एकता से ही सम्पन्नता बढ़ती है. ऐसे में सभी परिवारों को एकता के साथ ही रहना चाहिए. जहां एकता है, वहां ताकत स्वयं ही रहती है. इस आशय का प्रतिपादन सुख्यात समाजसेवी, राजलक्ष्मी मेडिकल के संचालक डॉ. राजेन्द्र नवाथे ने किया. उनके मुताबिक मानवता की सेवा सबसे बड़ी सेवा है. यह करने वाला व्यक्ति ही दुनिया में अमर होता है. दीपावली त्याग का पर्व है, अपनी खुशियों के साथ हमें ऐसे लोगों की खुशियों के बारे में भी सोचना चाहिए, जो इससे वंचित हैं. दीपावली पर उन्होंने सभी देशवासियों को शुभकामनाएं दी. साथ ही कामना की कि जितना संभव हो, सभी को मानव सेवा में हाथ बंटाकर अमर होने का प्रयास करना चाहिए. क्योंकि धन–दौलत साथ नहीं जाती है लेकिन हमारे नेक कर्म सदैव साथ रहते हैं.

मानवता की सेवा से बड़ा धर्म नहीं हूं

व्यावसायिक समाजसेवी अमोल चवणे

अमरावती–अपने लिए जिए तो क्या जिए वाले सिद्धांत पर चलते हुए जो लोग जीवन में मानव सेवा के लिए जीते हैं, वही हमेशा याद किए जाते हैं. अपने गम भुलाकर दूसरों के लिए कार्य करना आसान बात नहीं है. लेकिन अमोल चवणे अपना दर्द भुलाकर सेवा के माध्यम से अन्यों के चेहरे पर खुशी तलाशने वाले सेवाभावी व्यक्ति हैं. हजारों मित्र परिवार उन्होंने बनाया है. मोर्शी रोड के कॉटन किंग के संचालक चवणे जहां सफलतम व्यवसायी हैं, वहीं आदर्श मित्र के रूप में मित्रों की सहायता करते हैं. मानव होकर भी केवल खुद के लिए जीने वाले इंसान के लायक नहीं रहते हैं. मानव के रूप में हमसे जितना संभव हो हमेशा सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्य में योगदान देना चाहिए. इस आशय का मत समाज सेवी तथा सफल व्यवसाय अमोल चवणे ने किया. दीपावली पर उन्होंने समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए अभी तक दिखाए गए विश्वास के लिए धन्यवाद दिया और भविष्य में भी इसी तरह का सहयोग मिलने की अपेक्षा व्यक्त की.

विदर्भ स्वाभिमान के भारत के सबसे बड़े दिवाली विशेषांक की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इस अखबार ने हमेशा सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीय कर्तव्य को ही अपना फर्ज समझते हुए मानवता एवं राष्ट्र धर्म को अपेक्षित लेख और समाचार का प्रकाशन किया है. माता–पिता को जीवन में सबसे अधिक महत्व देने वाले अमोल चवणे ने कहा कि जब परिवार में खुशी रहती है तो तरक्की अपने आप होती है. जीवन में किया गया अच्छा काम कभी बेकार नहीं जाता है. इसलिए जितना संभव हो सदैव अच्छा करने का प्रयास करने की सलाह दी. अपनी खुशियों के साथी अन्यों की खुशियों की जो लोग चिंता करते हैं भगवान उन्हें कभी दुखी नहीं देख सकते हैं.

३४) भ. महावीर की वाणी कितने योजन तक फैलती थी ? /- एक योजन तक

३५) भ. महावीर का कद कितना था ? /- सात हाथ

३६) भ. महावीर का दीक्षा काल कितना था ? /- ४२ वर्ष

१३७) भ. महावीर की उग्र तपस्या कितने दिन की थी? /- छः महीने की

३८) भ. महावीर के कितने गणधर थे? /- ११गणधर थे

३९) भ. महावीर के कितने गण थे ? /- नौगण (१से ७ एक एक ५७) (८९८१/१०११-१)

४०) भ. महावीर केगुरू कानाम क्या था? /- उनके कोई गुरु नहीं थे

४१) भ. महावीर ने अधिक चातुर्मास कहाँ किये थे? /- राजगृही मे (१४ चातुर्मास)

४२) भ. महावीर के कितने साधु-साध्वियां थी ? /- साधु - १४०००, साध्वियाँ- ३६०००

४३) भ. महावीर के कितने श्रावक श्राविका थे? /- श्रावक- १५९०००, श्राविका- ३१८०००

४४) भ. महावीर के मुख्य शिष्य वशिष्या का नाम क्या था ? / - शिष्य - गौतमस्वामी, शिष्यां - चंदनबाला

४५) भ. महावीर ने किस तिथि को दीक्षाली थी? /- मिगसर वदी दसम

४६) भ. महावीर को गर्भ में कितने ज्ञान थे? /- तीन (मती, श्रुती, अवधि)

४७) भ.महावीरकी जन्म तिथि कौनसी थी ? /- चैत्र सुदी तेरस

४८) भ. महावीर ने किस शिबिका में बैठकर दीक्षा ली थी? /- चन्द्रप्रभा

४९) भ.महावीरके बाद किस गणधरने शासन संभाला था? /- सुधर्मास्वामीने

५०) भ. महावीर को किस तिथि को केवल ज्ञान हुआ था ? / - वैशाख सुदी दसम को

५१) भ.महावीरको किस वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान हुआ था ? / - शालवृक्ष के नीचे

५२) भ. महावीर को किस नदी के तट पर केवल्य हुआ था ?./ - ऋध्जुबालुका नदी तट पर

५३) भ. महावीर को किस ग्राम में केवल्य हुआ था ? /- जूंभिका ग्राम के बहार

५४) भ. महावीर को केवल्य किस आसन में हुआ था ? /- गोदोहिका आसन में

५५) भ. महावीर को केवल्य किस आयु मेंहुआथा? /- ४२ वर्षमें

५६) भ.महावीरकी आयुकितनी थी? /-७२ वर्ष की

१७) भ. महावीर का अन्तिम उपदेश क्या था ? /- उत्तराध्ययन के ३६अध्ययन

५१८) भ.महावीरके निर्वाणसमय कितने दिन कासंथारा था? /- २दिनका

१९) भ. महावीर ने किस तिथि को निर्वाण प्राप्त करा था ? /- कार्तिक वदी अमावस

६०) भ. महावीर को किस नगरी मे निर्वाण प्राप्त किया था ? / - पावापुरी

६१) भ. महावीर केवल्य बाद किस रोग से पिडीत हुए थे ? /- लोह खंडवा (अतीसार)

६२) भ. महावीर का शासन कब तक चलेगा ? /-५वेआरेके आखरी तक

६३) भ. महावीर को कितने सपने कितने समय मे आये थे ? / - १० सपने, अन्तरमुहूर्त

६४) भ. महावीर के मुख्य श्रावक कितने थे प्रथम कौन थे ? / - प्रमुख १० श्रावक - प्रथम आनन्द श्रावक

६५) भ. महावीर से किस श्राविका ने सभा मेंप्र. उ. किये थे? / - जयंति श्राविकाने

६६) भ. महावीर के मुख्य राजाभक्त कौन थे ? /- श्रेणिक राजा

६७) भ. महावीर के निर्वाण समय किस किस देश के राजा थे? /- ९ मल्लि - ९ लिच्छवी

६८) भ. महावीर के कितने कल्याणक थे ? /- छः-१) च्यवन,२) च्यवन, ३) जन्म, ४) दीक्षा,५) केवल्य, ६) निर्वाण.

६९) भ. महावीर ने दीक्षा किस वनमें ली थी? /- ज्ञातवनखंड में

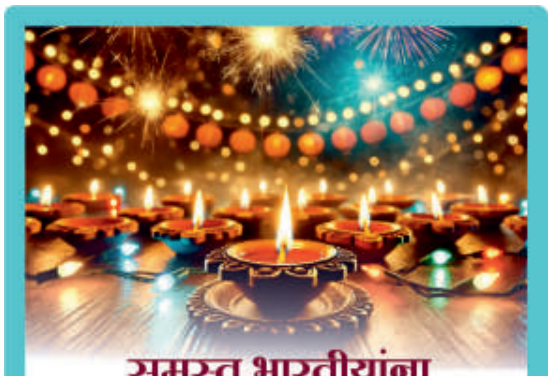

डॉ. राजेंद्र नवाथे
संचालक- राजलक्ष्मी मेडीकल, नवाथे प्लॉट, कृष्णार्पण कॉलनी, अमरावती

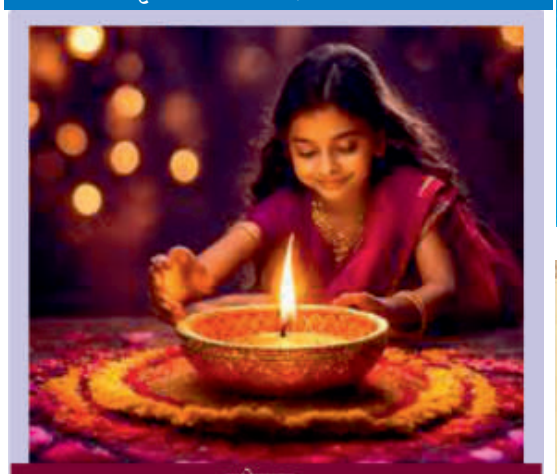

-शुभेच्छूक-
पुरुषोत्तम शिंदे-सौ. उज्वला शिंदे एवं परिवार
दिव्यांग सेवा तथा सामाजिक कार्यो में अग्रणी रहनेवाले उच्च विद्याविभूषित परिवार, साई नगर, अमरावती

डॉ.हेमंत पटेरिया सौ.अनुराधा पटेरिया

होटल रामगिरी इंटरनॅशनल
रेल्वेस्टेशन-एसटी स्टँड रोड, अमरावती.
शुभेच्छूक- सुनील जयस्वाल, प्रिती जयस्वाल व परिवार

डॉ. राजेश शर्मा, डॉ. प्रांजलताई शर्मा
तथा शर्मा परिवार, अमरावती.

मा.आ.बळवंत वानखडे
विधायक, दर्यापूर विधानसभा
मतदार संघ

७०) भ. महावीर ने २७ भव में मुख्य कितनी पदवी पाई थी ? /- १) वासुदेव, २) चक्रवर्ति, ३) तीर्थंकर.

७१) भं. महावीर ने २७ भव में नरक,तिर्यंच,मनुष्य,देव के कितने भव करे ? /- न: ति: मनु: देव

७२) भगवान महावीर माता -पिता केभक्त थे कैसे ? / गर्म मे अभिग्रह करना मातापिता के रहते दीक्षा नहीं लूंगा ।

७३) भ:: महावीर के माता-पिता नने दीक्षा की आज्ञा कब दी? / आज्ञा नहीं दी देवलोक होनेके २ वर्ष बाद दीक्षा ली ।

७४) भ:महावीर के जन्म समय कितने देव उपस्थित थे/६४ इन्द्र वसंख्यात देव थे।- ५६ कुमारियाँ

७५) भ: महावीर का वर्णन किस सूत्र में हे? / कल्पसूत्र, आचारांग, सूत्रकृतांग

७६) भ:: महावीर ने क्या श्रावक धर्म अंगीकार करा था ?/ नही करा था कारण तीर्थ: १,२, ३,५,११::स्पर्शनहीं करते ।

७७) भ:महावीर की देशना कब होती थी?/ सुबह, शाम ।

७८) भ:: महावीर को निर्वाण हुए कितने वर्ष हो गये है?/२५२८ वर्ष

७९) भ: महावीर कानाम वर्धमान क्यों रखा था?/ कक्योंकि गर्भ में आते ही धन धान्य की वृध्दि हुई थी ।

८०) भ:महावीर देवानंदा की कुक्षि मे कितनी रात्री रहे थे? / ८२रात्री ।

८१) भ:महावीरने किस श्राविका को संदेश भेजा था? किसके द्वारा भेजा ? / सुलसा श्राविका को अम्बड श्रावक द्वारा

८२) भ: महावीर कोदान का धन कौन देता था? दान कितने घंटे देते थे? / जृंभक देवता । ३ घंटे दान देते थे ।

८३) भ:महावीरका दान किसे जाता था?/ सिर्फ भवी कोही। अभवी को नहीं!

८४) भ:महावीरने कितने अभिग्रह धारण किये किससे छूटे? १३ अभिग्रह लीये चंदनबाला से छूटे ।

८५) भ:महावीर के कितने अतिशय थे?/ ३४ कुल / जन्म ४/ देव १९/ केवल्य ११।।

८६) भ: महावीर कितने साधुओंके साथ निर्वाण गये थे?/ अकेले गएथे

८७) भ:महावीरका अंतिम उपदेश कितने प्रहर चला था?/ १६ प्रहर।

८८) भ:महावीर के द्वारा कौनसा हत्यारा तीरा था ?/ अर्जुनमाली

८९) भ:महावीर केशिष्य जो गोशालक द्वारा भस्म हुए थे। सर्वानुभूती, सुनक्षत्र ।

९०) भ:महावीरने एकवर्षमे कितना दान करा है?/ ३ अरब ८८ करोड ८० लाख स्वर्ण मद्राए।

९१) भ:महावीरने अपना प्रवचन किस भाषा में देते थे? /अर्घमागधी मे ।

९२) भ::महावीरको गर्भ से स्थानांतर किस देव ने किया था?/ हरिण गमैषी देव ने

९३) भ:महावीरकोपैरो से दूध कब निकला व बुज्झ किसे कहा था?/ चंडकोशिक ने डसा व उसे ही कहा था।

९४) भ:महावीर के समय किन स्त्रियों ने तीर्थकरनाम कर्म का उपार्जन किया था? /सुलसा - रेवती ।

९५) भ:: महावीर का ससुराल किस शहरमेंथा? / साकेतपुर /

९६) भ:महावीर के शासन में जैन धर्म का प्रचार किसने किया ? (सिंप्रतिराजाने)

९७) भ:महावीर अनंत शक्ती के धारक थे कैसे? / भ:नेअंगूठे से मेरू कम्पाया, देव को हराया।

९८) भ:महावीर के समय में कितने आश्चर्य हुए थे ?/ ५ आ:, गर्भहरण, चमरदेव,अभवी परिषद, उपसर्ग, मूळ विमान चन्न्रसूर्य ।

९९) भ:महावीर के समय में १६ सतियोंमेसे कितनी सतियाँ हुई?/ पांच सतियाँ। च:, मृ: सु:, शी:, पद्मा:

१००) भ: महावीर ने उग्र तप कितने दिन का व कितने प्रकार के तप करें ? उग्र ६ मास / प्रकार १४।।

१०१) भ: महावीर के गणधर कितने अंग व पूर्व के ज्ञानी थे? / १२ अंग, १४१पूर्वके।

१०२) भ:: महावीर को दीक्षा बाद कौनसा चारित्र था ?/ यथाख्यात चारित्र / सामायिक चारित्र।

१०३) भ:: महावीर ने गौतम को त्रिपदी ज्ञान दिया उसका अर्थ? / उत्पाद, व्यय, धौव्य

१०४) भ: महावीर की देव ने परीक्षा कब ली और क्या नाम दिया? ८ वर्षमे ली, महावीर नाम।

१०५) भ:महावीर के निर्वाण बाद केवल ज्ञान किसे हुआ व पाट किसे मिला ?/ केवल गोतम स्वामी/ पाट सुधर्मा स्वामी ।

१०६) भ:: महावीर का रोग किस दानी, किसं द्रव्यसै मिटा था ?/ रेवती दानी के बिजोरापाक द्रव्य से ।

१०७) भ:: महावीर के शासन रक्षक देव देवी का नाम क्या था?/ देव मातंग, देवी-सिध्दायिका।

१०८) भ:महावीर के कंधे का देव वस्त्र किसे मिला था?/ भूदेव ब्राह्मण ।

१०९) भ: महावीर के कंधे पर कितने दिन वस्त्र रहा था?/ १३ महीने (१वर्ष १ महीना)

११०) भ: महावीर के समय के अभवी ? १) कपिलादासी २) कालुक कसाई ३) नमूची ४) संगम देव ५) इंगालमर्दन आचार्य ६) विनयरत्न ७) पालक प्रधान

१११) भ:महावीर के परिवार के दीक्षित जन?/ १) देवानंदा माता २) क्रश्षभदत्त पिता ३) सुपार्श्व काका ४) प्रियदर्शना बेटी ५) जमाली जवाई

११२) भ: महावीर के आँखो में ऑसू कब आये?/ संगमदेव के क्षमा मांगनेपर ।.

११३) भ:का जधन्य उपसर्ग कौनसा था?/ पहले चातुर्मास में ग्वाले की मार (कटपूतना की शित)

११४) भ:कामध्यम उपसर्ग कौनसा था?/ संगम देव के एकरात्री २० उपसर्ग फिर ६ मास तक उपसर्ग।

११५) भ:का उत्कृष्ठ उपसर्ग कोनसा था?/ ग्वाले द्वारा कानो में खिले ठोकना व खरक वैद द्वारा निकालना।

११६) भ:केतपमें उपवास व पारणे दिन कितने थे ?/ उपवास दिन ४१६६, पारणे ३ ४९ दिन।

११७) भ:ने कितने चातुर्मास कर धर्म बोध दिया?/ ३० चातुर्मास कर।

११८) भ:के छद्मस्थ काल के चातुर्मास कितने थे?/ १२ चातुर्मास!

११९) भ:के ३ प्रकार के साधक कैसे थे? १) प्रत्येक बुध्द २) स्थविरकल्पी ३) जिनकल्पी।

१२०) भ:नेजबगर्भमें अभिग्रह लिया तब कितने मास का गर्भ था?/ ७ मासका।

१२१) भ:किचिता कौनसी लकडियोंसे सजाई थी ? कौशिक चंदन से / गोशीर्ष चंदन से

१२२) भ:कोजल उपसर्ग के समय किसने रक्षा की थी?/ कंबल - संबल।

१२३) भ:कोसंगमदेवने किस रूपमें उपसर्ग दिए थे।?/ पिशाच रूपमें आदि कई।

१२४) भ: के निर्वाण समय कौनसा ग्रह लगा हुआ था?/ भस्मग्रह संक्रांत

१२५) भ:किन किन अनार्य क्षेत्र में गये थे?

खुशियां बांटने वाले व्यक्ति हैं डॉ.आशीष डगवार

जो लोग मन के अच्छे रहते हैं और अपने काम से कम रखते हैं ऐसे लोगों का सम्मान हर व्यक्ति करने का प्रयास करता है. ऐसे ही लोगों में शामिल हैं शहर के शिक्षा एंडोस्कोपी विशेषज्ञ डॉ.आशीष डगवार. उनका स्वभाव जितना बेहतरीन है इस तरह हुए सभी के सहयोग की सदैव भावना रखते हैं. यही कारण है कि उन्होंने वैद्यकीय व्यवसाय को जहां सेवा का माध्यम माना है वहीं आज भी गरीब मरीजों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं.

राजापेठ के गैलेक्सी हॉस्पिटल के संचालक रहने के साथ विभिन्न संगठनों से भी जुड़े रहकर सेवा का कार्य सदैव करते हैं. विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत में उन्होंने कहा कि जितना बन सके इंसान को इंसान की मदद करने का कार्य करना चाहिए. जो लोग यह कार्य कर पाते हैं दुनिया उन्हें सदैव याद रखती है. मानवता की सेवा को सबसे बड़ी सेवा और खुशी और प्रेम बांटने को सबसे बड़ा धर्म बताते हुए वह कहते हैं कि यह ऐसी खूबी है जो हमें सदैव सभी का सम्मान दिलाता है. काम के प्रति वे जहां समर्पित है वहीं यारों के यार के रूप में सामाजिक कार्यों में भी सदैव आगे रहते हैं. पिछले १५ वर्षों से मानवता और धर्म तथा संस्कारो को बढ़ावा देने वाले विदर्भ स्वाभिमान को सदेव सहयोग करने वाले धीर गंभीर चेहरे के बाद भी आत्मीयता रखने वाले डॉ.डगवार ने सदैव भाई जैसी आत्मियता रखते हुए सहयोग किया है. उनका कहना है कि किसी अच्छे काम की उम्मीद तो सभी करते हैं लेकिन जब अच्छा काम करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है तो अच्छे काम की श्रृंखला अपने आप बन जाती है. दीपावली पर उन्होंने सभी को सुख समृद्धि और स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए शुभकामनाएं दी है.

वजभूमी शुद्रभूमी में / सिंहभूमि लाट आदि देशमें।

१२६) भः महावीर के समय और एक महान पुरूष कौन हुए?/ गौतमबुध्द

१२७) भः: महावीर की पुत्री को किस श्रावकने पुन: जागृत किया था ?/ डंक श्रावक ने ।

१२८) भः: महावीर के पास किस चोर ने दीक्षा ली थी?/ रोहिणी ।

१२९) भ:महावीर के किस श्रावक की पत्नी ने सात सोतो को मारा था?/ महाशतक की पत्नी रेवती।

१३०) भ:महावीर का प्रथम चातुर्मास कहाँ हुआ था?/अस्थि ग्राम केमोराक सन्निवेश मेंतापसो केआश्रम १५ दिनरहे

१३१) भःमहावीर केपांवको चटका कहाँ लगा व पाव चिन्ह किसने देखे?/ चटका- हरीद्रगांव में हरिद्र वृक्ष के नीचे, पुष्प ने देखा ।

१३२) भः महावीर ने चतुर्विध संघ की स्थापना क्यों की थी? तीर्थंकर नाम कर्म को क्षय करने को।

१३३) भः महावीर के समय किन राजाओ के युद्ध में एक कराडो ८० लाख जीव मरे थे? / कोणिक चेटक के युध्द मे।

१३४) भ: महावीर के सात निहव थे/ जमाली २) तिष्यगुप्त ३) आषाढाचार्य ४) अश्वमित्र ५) गर्गाचार्य ६) गोष्ठा माहिल ७) प्रजापति ।

१३५) भ:महावीर के निह्व यानी क्या?/ जो भ: के विपरीत प्ररूपणा करे वह निह्नव है।

१३६) भः: महावीर के माता त्रिशला के और दो नाम्या थे? / विदेह दिन्ना, प्रितिकारणी ।

१३७) भ: महावीर के पिता सिध्दार्थ के और दो नाम क्या थे ?/ श्रेयांस, यशस्वी ।

१३८) भ: महावीर की पुत्री के और दो क्या नाम थे/ अणुजा, अणवधा।

१३९) भ: महावीर के प्रसिध्द शिष्य कौन व कितने जीवोने एक साथ दीक्षाली थी ? / जम्बुस्वमी ५२७ जनने।

१४०) भ: महावीर केशिष्य गौतम व केशीश्रमण मे कितने प्र: पर चर्चा हुई ?/ १२ प्र: पर।

१४१) भ:महावीरके समय के गोशालक चंडकोशिक मर करकहाँगये ?/ गोशालक १२ वे देवलोक / चंड ८ वेदेवलोक

१४२) भः: महावीर गंगा पारकर कहाँसे कहाँ जा रहे थे? सुरभिपुर से राजगृही

१४३) भ:महावीरके तपस्या दिन कुल कितने थे ? ११ वर्ष ६ मास १५ दिन / कुल दिन ४५१५ थे

१४४) भ: महावीर के और कितने नाम थे ?/ वर्धमान, असण, काष्यपुत्र, ज्ञातपुत्र, वैशालिक, विदेहपुत्र, सन्मति,।

१४५) भ:महावीर कब अवतरित हुएथे ?/चौथे आरे के ७५ वर्ष ८ मास शेषरहते / निर्वाण चौथे आरे के ३ वर्ष ८१ /२मास शेषरहते।

१४६) भ:महावीरके समय किन जीवोने तिर्थकर गोत्र बांधा ? / १) शंख, २) शतक, ३) सुपार्श्व, ४) श्रेणिक, ५) पोटीला, ६) उदायी, ७) सुलसा, ८)रेवती, ९) अम्बडसंयासी।

१४७) भ:महावीर के शासन मे मोक्ष जाना कब प्रारंभ हुआ। / केवलज्ञान होने के ४ वर्ष बाद से ।

१४८) भ:महावीरके प्रथम शिष्य गोशालक के माता पिता कौन थे? /- पिता - मंखली, माता - भद्रा

१४९) भः महावीर के समय किन राजाओ के कितने पट्टधर मोक्ष गये ? /२गये-(१) सुधर्मास्वामी (२) जम्बुस्वामी।

१५०) भ: महावीर के शासनकाल केअन्तीम समय एक भवतारी होंगे ?/- ४ जन १)ट- साधु फाल्गुनी साध्वी ३) नागिल श्रावक ४).सत्यश्री श्राविका बन टि वड अचत सां ३

विदर्भ में बढ़ रहे हैं व्यंकटेश बालाजी के भक्त

दायमा परिवार को देते हैं भक्तों को मौका देने वाला परिवार

शहर के व्यंकटेश धाम, खल्लार स्थिति बालाजी मंदिर के साथ ही मोर्शी तहसील के काटपुर ममदापुर में श्री व्यंकटेश बालाजी के मंदिर और इन मंदिरों से जुड़े लाखों भक्तों के चरणों में नमन. विदर्भ मेंतिरूपति निवासी भक्त वत्सल भगवान व्यंकटेश बालाजी के दर्शन कराने का श्रेय बालाजी के अनन्य भक्त स्व.रतनलालजी दायमा को जाता है. प्रभु की कृपा के साथ ही पिता की इसी भक्ति विरासत को उनके पुत्र गोविंद तथा रमण दायमा, खल्लार बालाजी मेंसंस्थान अध्यक्ष खड़से परिवार तथा काटपुर ममदापुर में श्री बालाजी मंदिर का प्रबंधन करने वाले सुभाषचंद्र राठी परिवार ने कायम रखा है. तीनों ही मंदिरों में हर साल कई कार्यक्रम होते हैं. लाखों की संख्या में भक्त इसमें शामिल होकर बालाजी की कृपा प्राप्त कर जीवन को धन्य कर रहे हैं. शहर को धार्मिक नगरीके रूप में जाना जाता है. यही कारण है कि अमरावती में बड़े से बड़े आयोजन जहां होते हैं, वहीं दूसरी ओर यहां की जनता भी धार्मिक है. संत-महात्माओं की पवित्र भूमि के साथ ही यहां पर कई मंदिरों की ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर है. ऐसे ही मंदिरों में शामिल है जयस्तंभ चौक से चंद कदमों की दूरी पर स्थिति अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी, महालक्ष्मी माता तथा पद्मावती माता का मंदिर व्यंकटेशधाम. मोर्शी से ३०० साल से निकलने वाली भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी की

पालखी में हजारों भक्त शामिल होते हैं. इस साल पालखी का दर्शन करने का सौभाग्य बडनेरा के सुदर्शन गांग के निवास सम्यक सदन में हुआ. जीवन धन्य होने का एहसास हुआ.

व्यंकटेशधाम मंदिर के सामने संकटमोचन हनुमानजी की भव्य मूर्ति भक्तों को जहां मुसीबत में भी नहीं घबराने की सीख देती है, वहीं रिद्धी-सिद्धि के दाता गणेशजी की आकर्षक मूर्ति भक्तों को सदुण सम्पन्न बनाती है. भक्त रतनलाल दायमा द्वारा भक्तों के चरणरज के लिए लगाई गई मार्बल उनकी अटूट भक्ति का जहां प्रतीक है, वहीं दोनों भाई तथा पूरा दायमा परिवार ही प्रभु की भक्ति में लगा है. कहते हैं प्रभु की भक्ति पूर्व जन्म के पुण्य से ही मिलती है. आक्सीजन हमें जिंदा रखता है लेकिन वह दिखाई नहीं देता है. उसी तरह दुनिया में कोई ऐसी शक्ति है जो दुनिया का संचालन करती है. हमारे कर्मों का हिसाब-किताब करती है. अमरावती शहर ही नहीं तो विदर्भ में सुख्यात जयस्तंभ चौक के करीब स्थित व्यंकटेशधाम लाखों भक्तों का आस्थास्थल बना हुआ है. व्यंकटेशधाम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एड.आर.बी. अटल के नेतृत्व में सभी सेवा समर्पित पदाधिकारियों तथा सेवाधारियों का प्रभु के प्रति समर्पण देखकर निश्चित तौर पर अपार हर्ष होता है. धार्मिकता के साथ ही मानवता के धर्म को बढ़ावा देने की पहल यहां होती है. अन्नदान जैसे कायक्रम निरंतर चलते हैं. मंदिर के हेडाजी, रामेश्वर भाऊ के साथ मंदिर के सभी पुजारी भी प्रभु कीसेवा का भाग्य प्राप्त कर रहे हैं.कलयुग के तमाम पापों का नष्ट कर जीवन को खुशहाल बनाने वाले भगवान व्यंकटेश बालाजी के साथ ही मां महालक्ष्मी तथा मां पद्मावती के दर्शन का लाभ यहां भक्तों को मिलता है.मंदिर न केवल अमरावती बल्कि समूचे विदर्भ के लिए आदर्श मंदिर साबित हो रहा है.

ओमप्रकाश त्रिपाठी
बालाजी नगर,अमरावती.

सही ढंग से निभाया गया कर्म भी आता है धर्म कार्य में

जिला ग्रामीण पुलिस अधीक्षक विशाल आनंद है कर्मठ अधिकारी

अमरावती-जीवन में मेहनत, लगन और समर्पण का पर्याय हो ही नहीं सकता. काम करने से ही हमें संतुष्ट मिलती है.जो काम करने से हमारा दिल संतुष्ट हो जाए उस काम में जीवन में हम कभी असफल हो ही नहीं सकते हैं. इस आशय का प्रतिपादन अमरावती जिला ग्रामीण पुलिस अधीक्षक और कर्मठ अधिकारी विशाल आनंद सिंगुरी ने किया. मानवता की सेवा को सबसे बड़ी सेवा और अपनी जिम्मेदारी को बेहतरीन ढंग से निभाने को सबसे बड़ा पुण्य कार्य मानने वाले विशाल आनंद के मुताबिक किसी की कमियों को देखने के बजाय सबसे पहले हमें हमारी कमियां देखने का प्रयास करना चाहिए. जीवन में सकारात्मक को सफलता की सीधी मानने वाले और इतने बड़े पद पर रहने के बाद भी सादगी और मिलनसार लेकिन साथ अनुशासन को जीवन में अत्यधिक महत्व देने वाले विशाल आनंद के मुताबिक हर मानव को मानवता का धर्म निभाना चाहिए. वे कहते हैं कि दुनिया में प्रेम, ज्ञान और खुशियां हमेशा बांटने से बढ़ती हैं. जिस दिन से हम यह तीनों बांटना शुरू करते हैं असली मायने में हमारा जीवन उसी दिन से सार्थक होना शुरू हो जाता है. पद की गरिमा संबंधित व्यक्ति की योग्यता से बढ़ती है. भारतीय संस्कृति में दीपावली का त्यौहार भी हमें केवल अपने लिए नहीं जीने बल्कि त्याग का संदेश देता है. दीपक स्वयं जलता है लेकिन इंसान का स्वभाव दूसरों से जलने का नहीं होना चाहिए. दीपक स्वयं जलकर अन्य को रोशनी देता है लेकिन मानव स्वभाव में इसकी कमी के कारण तरह-तरह के दुख हम भोगते हैं. दीपावली को हमारी किसी एक बुराई को छोड़ने और एक अच्छाई को अपने जीवन में शामिल करने का, स्वयं खुश रहते हुए अन्य को भी खुशियां देने का संकल्प करना चाहिए. दीपावली पर विशाल आनंद ने सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी.